Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

अंक 37

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

2 मुहर्रम 1439 हिजरी कमरी 13 तबूक 1397 हिजरी शमसी 13 सितम्बर 2018 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَنۡفِقُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَلَا تُلۡقُوۡا بِاَیۡدِیۡکُمۡ اِلَی التَّہۡلُکَۃِ ۚۖۛ وَاَحۡسِنُوۡا ۚۛ اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: और अल्लाह के मार्ग में खर्च करो और अपने हाथों से अपने आप को हलाक मत करो। और उपकार करो अल्लाह उपकार करने वालों को पसन्द करता है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

प्रत्येक जो आकाशीय प्रकाश से रूहुलक़ुदुस द्वारा सदाचार से हिस्सा नहीं पाता वह सदाचार के दावे में झूठा है और उसके पानी के नीचे बहुत सारा कीचड़ और गोबर है, जो तामसिक आवेगों के समय प्रकट होता है। अत: तुम ख़ुदा से हर समय शक्ति मांगो ताकि उस कीचड़ और गोबर से मुक्ति पाओ और रूहुलक़ुदुस तुम में वास्तविक पवित्रता और उदारता पैदा करे।

हंसी ठट्ठा, गाली-गलोज, मोह, झूठ, कुकर्म, बुरी दृष्टि, बुरे विचार, दुनिया की उपासना, अभिमान, अहंकार, स्वयं को श्रेष्ठ समझना, उद्दण्डता, निरुददेश्य विवाद सब त्याग दो,

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

परन्तु सूरह फ़ातिह: की प्रार्थना हमें सिखाती है कि ख़ुदा को धरती पर प्रतिपल वही अधिकार प्राप्त है जैसा कि जगत के अन्य भागों पर। और सूरह फ़ातिह: के प्रारंभ में ख़ुदा की उन अधिकारों से परिपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख है। ऐसा उल्लेख संसार में किसी अन्य पुस्तक ने इतने स्पष्ट रूप से नहीं किया। जैसा कि ख़ुदा का कथन है कि वह कर्मों का प्रतिफल प्रदान करने वाला और बिन मांगे देने वाला, प्रतिफल देने और दण्ड देने वाले दिन का स्वामी है। फिर उससे प्रार्थना करने की शिक्षा दी है और जो प्रार्थना की गई है वह मसीह की दी हुई शिक्षा की भांति मात्र प्रतिदिन की रोटी का निवेदन नहीं, अपितु मानवीय स्वभाव को प्रारंभ से जो शक्तियां प्रदान की गईं और उसको प्यास लगा दी गई है उस प्रार्थना की शिक्षा दी गई है और वह यह है-

اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ (अल्फ़ातिह:)

अर्थात हे उन सम्पूर्ण विशेषताओं के स्वामी और दानी कि कण-कण तुझ से पोषण पाता है, तेरी रहमानियत और रहीमियत की विशेषता और कर्मों के प्रतिफल और अशुभ कर्मों पर दण्ड देने की शक्ति से लाभ उठाता है। तू हमें सद्मार्गी पूर्वजों का उत्तराधिकारी बना और हर एक पुरस्कार जो उनको प्रदान किया हमें भी प्रदान कर, हमें सुरक्षित रख कि हम अवज्ञाकारी होकर प्रकोप के पात्र न बन जाएं, हमें सुरक्षित रख कि हम तेरी सहायता से वंचित रहकर पथ भ्रष्ट न हो जाएं । आमीन

अब इस समस्त छान-बीन से इन्जील की प्रार्थना और क़ुर्आन की प्रार्थना में अंतर स्पष्ट हो गया कि इन्जील तो ख़ुदा के राज्य आने का एक वायदा करती है परन्तु क़ुर्आन बताता है कि ख़ुदा का राज्य तुमहारे अंदर विद्यमान है, न केवल विद्यमान बल्कि क्रियात्मक रूप में तुम्हें वह लाभ भी पहुंचा रहा है। अत: इन्जील में तो मात्र एक वायदा ही है परन्तु क़ुर्आन न मात्र वायदा करता है बल्कि उसके स्थायी राज्य और उसके उपकारों को भी दृष्टिगोचर कर रहा है। अब क़ुर्आन की श्रेष्ठता इस से स्पष्ट है कि वह उस ख़ुदा को प्रस्तुत करता है जो इसी सांसारिक जीवन में सत्य मार्ग पर चलने वालों का मुक्तिदाता और सत्य मार्ग पर पदार्पण करने वालों का विश्रामदाता है और कोई भी प्राणी उसके लाभ से वंचित नहीं बल्कि प्रत्येक पर उसके पोषण करने, कर्मों का प्रतिफल देने और कर्मों के बिना प्रदान करने का विधान जारी है। परंतु इन्जील उस ख़ुदा को प्रस्तुत करती है जिसका राज्य अभी संसार में नहीं आया, मात्र आश्वासन है। अब विचार करो कि बुद्धि किस को अनुसरण योग्य समझती है। ....और इन्जीलों में शालीन व्यक्तियों, ग़रीबों, दीनों की सराहना की गई है और उनकी सराहना जो सताए जाते1 हैं और मुकाबला नहीं करते परन्तु क़ुर्आन केवल यही नहीं कहता कि तुम हर समय दीन-हीन बने रहो और बुराई का मुकाबला न करो। बल्कि कहता है कि शालीनता, दीनता, निर्धनता और मुकाबले से स्वयं को अलग रखना अच्छा है परन्तु इनका इस्तैमाल यदि अनुपयुक्त अवसर पर किया जाए तो बुरा है। अत: तुम प्रत्येक पुण्य को अवसर और समयानुसार करो क्योंकि वह पुण्य पाप है, जो अवसर और समय के प्रतिकूल है । जैसा कि तुम देखते हो कि वर्षा कितनी अच्छी और आवश्यक वस्तु है, परन्तु यदि वह समय के अनुरूप न हो तो वही बर्बादी का कारण बन जाती है या तुम देखते हो कि एक ही प्रकार के ठंडे या गर्म भोजन के निरन्तर सेवन से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता, स्वास्थ्य तभी ठीक रहेगा जब कि तुम्हारे भोजन में अवसर और समय के अनुरूप परिवर्तन होता रहे। अत: कठोरता और विनम्रता, क्षमा करना और बदला लेना, दुआ और श्राप तथा अन्य सदाचारों में जो तुम्हारे लिए समय की पुकार है, वे भी इसी परिवर्तन को चाहते हैं। श्रेष्ठतम, शालीन और विनम्र बनो परन्तु अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त अवसर पर नहीं। इसके साथ यह भी स्मरण रखो कि सच्ची और उच्चकोटि की नैतिकता जिसके साथ स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की कोई विषाक्त मिलावट नहीं वह ऊपर से रूहुलक़ुदुस द्वारा आती है। अत: तुम इन श्रेष्ठतम सदाचारों को मात्र अपने प्रयासों से प्राप्त नहीं कर सकते जब तक तुमको ऊपर से वह सदाचार प्रदान न किए जाएं। प्रत्येक जो आकाशीय प्रकाश से रूहुलक़ुदुस द्वारा सदाचार से हिस्सा नहीं पाता वह सदाचार के दावे में झूठा है और उसके पानी के नीचे बहुत सारा कीचड़ और गोबर है, जो तामसिक आवेगों के समय प्रकट होता है। अत: तुम ख़ुदा से हर समय शक्ति मांगो ताकि उस कीचड़ और गोबर से मुक्ति पाओ और रूहुलक़ुदुस तुम में वास्तविक पवित्रता और उदारता पैदा करे। स्मरण रखो कि सच्चा और पवित्र आचरण सत्यवादियों का चमत्कार है जिनमें कोई अन्य भागीदार नहीं। क्योंकि वे जो ख़ुदा में लीन नहीं होते वह ऊपर से शक्ति नहीं पाते। इसलिए उनके लिए संभव नहीं कि वह पवित्र आचरण प्राप्त कर सकें। अत: तुम अपने ख़ुदा से पवित्र संबंध स्थापित करो। हंसी ठट्ठा, गाली-गलोज, मोह, झूठ, कुकर्म, बुरी दृष्टि, बुरे विचार, दुनिया की उपासना, अभिमान, अहंकार, स्वयं को श्रेष्ठ समझना, उद्दण्डता, निरुददेश्य विवाद सब त्याग दो, फिर यह सब कुछ तुम्हें आकाश से प्राप्त होगा। जब वह उच्च और श्रेष्ठ शक्ति जो तुम्हें ऊपर की ओर खींच कर ले जाए तुम्हारे साथ न हो और रूहुलक़ुदुस जो जीवन प्रदान करता है तुम में प्रवेश न करे तब तक तुम बहुत ही निर्बल और अंधकार में पड़े हुए हो, बल्कि एक मुर्दा हो जिसमें जान नहीं। इस दशा में न तो तुम किसी मुसीबत का सामना कर सकते हो और न ही उन्नति और न ही धनधान्य से परिपूर्ण होने की दशा में अहंकार और अभिमान से सुरक्षित रह सकते हो। हर एक पहलू से तुम शैतान और स्वयं के दास हो। अत: तुम्हारी चिकित्सा तो वास्तव में एक ही है कि रूहुलक़ुदुस जो अल्लाह की विशेष मेहरबानी से उतरता है तुम्हारा मुख सच्चाई और पुण्यों की ओर फेर दे। तुम आकाशीय बेटे बनो न कि धरती के बेटे, प्रकाश के उत्तराधिकारी बनो न कि अंधकार के प्रेमी ताकि तुम शैतान के मार्गों से अमन में आ जाओ क्योंकि शैतान का लक्ष्य हमेशा रात है दिन उसका लक्ष्य नहीं। वह पुराना चोर है जो हमेशा अंधकार में कदम रखता है।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 43 से 45)

☆ ☆ ☆

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-9)

☆ **इस्लाम अहमदिया जमाअत एक विशेषता रखती है क्योंकि इन के सदस्य इस समाज में बहुत रचे बसे हुए हैं पिछले 50 सालों से जब से आप यहां हैं हम इस शान्ति वाले समाज में मिलजुल कर रहने पर ख़ुश हैं यह मेरे लिए बहुत ख़ुशी की बात है।**

इस्लाम समस्त इंसानों को हर प्रकार की नफरत दुश्मनी और बुराई को दूर करने की नसीहत करता है इसी प्रकार आप ने मुहब्बत और आपसी भाईचारे तथा सम्मान के झंडे तले जमा होने की नसीहत की। आपने तीसरे विश्वयुद्ध के बारे में अपने विचारों का इजहार करते हुए फरमाया मतभेद सारी दुनिया में आग लगाने के काम को जारी रखे हुए हैं और हमें किसी शक में नहीं पड़ना चाहिए कि एक ख़तरनाक जंग के साए हमारे सामने लहरा रहे हैं विभिन्न ब्लॉक्स और गठबंधन हमारे सामने बन रहे हैं, मुझे इस बात का भय है कि हम वास्तविक सूरत-ए-हाल स्पष्ट किए बिना एक ख़तरनाक तीसरे विश्वयुद्ध की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इस जंग के चिन्ह प्रकट हो चुके हैं उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया और एक दूसरे का सम्मान करने से हम अपनी आने वाली नस्लों को सुरक्षित बना सकते हैं।

अख़बार Kristelight Dagblad ने अपने दिनांक 11 मई 2016 ई

डेनमार्क की मीडिया में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ के दौरा के बारे में खबरें

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

डेनमार्क की मीडिया में हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ के दौरा के बारे में खबरें

डेनमार्क के लोकल अखबार Hvidover Avls ने अपने 10 मई 2016 ई के प्रकाशन में हुज़ूर अनवर और मस्जिद नुसरत जहां की तस्वीर के साथ नीचे लिखी ख़बर दी।

किया 50 साल पहले इस मस्जिद की नींव रखी गई। विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम ने जब मस्जिद नुसरत जहां का दौरा किया तो मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं का माटो केन्द्रीय महत्तव पर आधारित था।

मध्य एशिया से आपसी मुकाबला की ख़बरों के मध्य पिछले हफ्ते में जहां में खुशी का माहौल था मस्जिद नुसरत जहां डेनमार्क की पहली मस्जिद थी, बल्कि नार्थ के देशों की पहली गुम्बद वाली मस्जिद थी जो शांति वाले रिहायशी इलाके Eriksminde तथा Kirkegade के एक कोने में स्थापित है इसके 50 साल पूरा होने पर एक आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सम्माननीय ख़लीफा हजरत मिर्ज़ा मस्रूर अहमद साहिब जो विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लीडर हैं उपस्थित थे। यह जमाअत इस्लाम में एक सुधारवादी जमाअत है 207 देशों में इस के लाखों अनुयायी हैं विरोध और मुसलमानों में अल्प संख्यक होने के बावजूद यह मुसलमानों में बड़ी व्यवस्थित जमाअत है जो अक विश्वव्यापी रूहानी लीडर ख़लीफा के साथ जुड़ी हुई है।

पिछले दिनों Hvidover के मेयर तथा अन्य कौंसल के सदस्यों ने सम्माननीय से मुलाकात की जिस में ख़लीफा का यह सन्देश था कि शान्ति के लिए हम सब को मिल कर काम करना चाहिए। शान्ति इस समय की बहुत महत्त्वपूर्ण चीज़ है। हम सबको मिलकर काम करना चाहिए। यह समय की आवश्यकता है इंसानों में बराबरी धर्म से है यह दूसरा संदेश था

फिर आपने यह भी फरमाया कि हम सब एक दूसरे को मार दें तो फिर धर्म पर अनुकरण करने के लिए कौन बचेगा। इस बात पर ज़ोर देते हुए उन्होंने यह बात दोबारा दोहराई कि मानवता में बराबरी धर्म से पहले है।

1966 ई से यह मस्जिद Hvidover के इस शान्ति वाले निवासीय इलाके में एक सुंदर आर्किटेक्ट है। यह सेंटर कई दशकों से डेनमार्क में एक सकारात्मक धार्मिक और कल्चर इंस्टिट्यूशन के तौर पर मानव जाति की सहानुभूति और आपस में मिलकर रहने जैसी खूबियों के साथ काम कर रहा है और इन विशेषताओं की वजह से असंख्य लोग इसे देखने आते हैं। जिसमें साधारण देखने वाले , अन्य धर्मों से संबंध रखने वाले मिनिस्टर एंबेसडर और पार्लियामेंट के सदस्य भी शामिल हैं। इस मुल्क के इमाम और सदर मुस्लिम जमाअत का कहना है कि आने वाले 50 सालों के लिए भी हमारी यही इच्छा है कि हम समाज में इस काम और सेवा को पहले से बढ़कर करने वाले हों। अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लाम में विश्वव्यापी स्तर पर एक शांति देने वाली और सक्रिय जमाअत है जिसका उद्देश्य है अमन के लिए काम करना है। इसकी स्थापना 1889 ई में हजरत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ऑफ इंडिया ने रखी है आप ने इस ज़माने के लिए धार्मिक रिफॉर्मर होने का दावा किया। आप की यह कोशिश थी के व्यक्तिगत तौर पर हर एक का संबंध ख़ुदा तआला के साथ क़ायम हो जाए और बहुत सी गलत धारणाएं जो ज़माना के व्यतीत होने के कारण से लोगों में आ जाती हैं और इस्लाम का एक हिस्सा बन चुकी थी उन्हें दूर किया उदाहरण के लिए उन्होंने तलवार के जिहाद की बजाए कलम से जिहाद के प्रमाण दिए इसके अतिरिक्त उन्होंने 80 से अधिक पुस्तकें लिखीं।

डेनमार्क में 1950 ई के दशक से इस्लाम अहमदिया जमाअत देश की सबसे पुराने संस्था है। अन्य कामों के अतिरिक्त 1967 ई पहला डेनिश भाषा में क़ुरआन मजीद का अनुवाद प्रकाशित किया गया और उत्तर में सबसे पहली गुंबन्द वाली मस्जिद की स्थापना उन की औरतों ने Hvidover में की। यह मुस्लिम अमन के लिए भी जाने जाते हैं। और डायलाग, मीटिंग प्रदर्शनी चेरटी के लिए फण्ड रक्त दान और बेघरों को खाना खिलाने जैसे कामों के लिए भी जाने जाते हैं। इमाम का कहना है का हमारा उद्देश्य प्रत्येक सतह पर अमन की स्थापना करनी है। और 207 देशों में जहां हमारी जमाअत स्थापित है हमारे कई लाख सदस्य समाज में लाभदायक काम में सक्रिय हैं और सकारात्मक रंग में समाज में अच्छा काम कर रहे हैं हम अपने स्लोगन प्रेम सबके लिए है घृणा किसी से नहीं के अधीन सारे इंसानों के साथ धार्मिक क्षेत्रीय और विभिन्न मतभेदों के बावजूद अच्छे और शांति वाले संबंध स्थापित करना चाहते हैं।(इस अखबार के पाठकों की संख्या 50000 है।)

अख़बार Kristelight Dagblad ने अपने दिनांक 11 मई 2016 ई के प्रकाशन में लिखा है (यह नेशनल अख़बार है जिसके पढ़ने वालों की संख्या 115000 है। यह देश का सबसे बड़ा धार्मिक अख़बार है इस में प्रकाशित होने वाले निबंध का अनुवाद नीचे लिखा गया है।

मुस्लिम लीडर के साथ चर्च मिनस्टर का शांति के बारे में विचार विमर्श

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के विश्वव्यापी लीडर पिछले दिनों डेनमार्क के दौरे पर थे उन्होंने चर्च मिनिस्टर Bertel Haarder 5 के साथ मुलाकात की और अमन के बारे बात की और तीसरी विश्वव्यापी जंग के बारे में अपनी शंकाओं को प्रकट किया।

हिल्टन होटल के कांफ्रेंस हॉल में ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला के इंतजार में बातें हो रही थीं क्या हम खड़े होंगे जब वह अंदर पधारेंगे और क्या उनकी तरफ पीठ करके बैठा जा सकता है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के विश्वव्यापी धार्मिक मार्गदर्शक, मुसलमान देशों में मुखालफत की वजह से लंदन में स्थित हैं जहां से वह इस समाज का मार्गदर्शन कर रहे हैं। 11 वर्ष पहले वह डेनिश में आए थे और उनके इंतजार को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कमरें एक बार सीधी की गईं बहुत से लोग मान तथा सम्मान के लि खड़े हो

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

अल्हम्दो लिल्लाह पिछले रविवार को अपनी बरकतें बिखेरेते हुए और अल्लाह तआला के फज़्लों को व्यक्त करते हुए जलसा सालाना यू.के अपने समापन को पहुंचा। ये तीन दिन बहुत बरकतों वाले थे।

इस जगह पर जो लगभग जंगल है सारी सुविधाओं के साथ एक अस्थायी शहर बना देना कोई मामूली काम नहीं है और फिर यह भी कि सौ प्रतिशत व्यावसायिक महारत रखने वाले यह काम नहीं कर रहे होते। यह सब कुछ हो रहा है और यह अल्लाह तआला की कृपा के परिणाम से प्राप्त होता हैं। अल्लाह तआला ही है जो इन प्रयासों को असामान्य रूप से सफल करता है और जो मेहमान आते हैं वह भी हैरान होकर कार्यकर्ताओं की भावना को देखकर इस बात का इज़हार करते हैं।

जलसा जहां अपनों को ईमान में मजबूती और भाईचारे को बढ़ाने का साधन बनता है वहाँ दूसरों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बताने का भी माध्यम बनता है।

इस समय सारांशत: कुछ प्रतिक्रियाएं आपके सामने रखूंगा जिससे पता चलता है कि जलसा की बरकतों का दूसरों पर भी कितना असर होता है।

जलसा सालाना की व्यवस्था, जलसा के अवसर पर हुज़ूर अनवर के भाषणों और अन्य वक्ताओं के भाषणों, जलसा सालाना के माहौल स्वय सेवकों के जज़्बा-ए-सेवा और जलसा की बरकतों से संबंधित दुनिया के विभिन्न देशों से आए हुए मेहमानों की प्रतिक्रियाओं में से कुछ ईमान अफ़रोज़ वर्णन।

जलसा का रेडियो, टीवी, समाचार पत्र और सोशल मीडिया द्वारा बड़े पैमाने पर प्रचार। इस माध्यम से लाखों लोगों तक इस्लाम अहमदियत पहुंची।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो 'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 अगस्त 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्हम्दो लिल्लाह के पिछले रविवार को अपनी बरकतें बिखेरेते हुए और अल्लाह तआला के फज़्लों को व्यक्त करते हुए जलसा सालाना यूके अपने समापन पर पहुंच गया। ये तीन दिन बहुत बरकतों वाले थे। जलसा सालाना तैयारियां तो लगभग पूरे साल ही चलती हैं लेकिन पिछले तीन चार महीने तो विशेष रूप से प्रशासन और कई स्वयंसेवी जलसा की तैयारी के लिए व्यस्त हो जाते हैं और जलसा से पहले के दो सप्ताह तो स्वयंसेवकों की संख्या भी बहुत बढ़ जाती है खासकर हदीकतुल महदी सभी सुविधाओं को प्रदान करने के लिए कार्यकर्ता अपनी सारी क्षमताओं के साथ काम कर रहे होते हैं, जिनमें युवा ख़ुद्दाम की एक बहुत बड़ी संख्या है। इस जगह पर जो लगभग जंगल है सारी सुविधाओं के साथ एक अस्थायी शहर बना देना कोई मामूली काम नहीं है और फिर यह भी कि सौ प्रतिशत व्यावसायिक महारत रखने वाले यह काम नहीं कर रहे होते। यह हो रहा है और अल्लाह तआला की कृपा के परिणाम से होता है। अल्लाह तआला ही है जो उनके प्रयासों को असामान्य रूप से सफल करता है और जो मेहमान आते हैं वह भी हैरान होकर कार्यकर्ताओं की भावना को देखकर इस बात का इज़हार करते हैं। जलसा से पहले जो कार्यकर्ता काम कर रहे होते हैं वे जलसा के दिनों में और भी बढ़ जाते हैं और फिर इसमें युवा, बूढ़े, बच्चे, पुरुष, महिलाएं सभी शामिल होते हैं और यह एक असामान्य बात है कि कैसे बच्चे और बड़े अपने काम में अत्यिधक व्यस्त हैं। मेहमान जिन को इस बात का कभी अनुभव नहीं होता है उनके काम से प्रभावित होते हैं। जिस तरह से यह लोग अपने विचार व्यक्त करते हैं वह एक असामान्य अभिव्यक्ति होती है। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं की सेवा को देखने के अलावा इस बात को भी व्यक्त करते हैं कि जलसा ने उन पर एक विशेष प्रभाव छोड़ा है, उनका जीवन बदल गया है। बावजूद मुस्लमान न होने के उन पर इस्लाम की शिक्षा का प्रभाव हुआ है। इस्लाम और जमाअत के बारे में जानकारी बढ़ गई है। और इस्लाम के नकारात्मक प्रभाव के बजाय, उन्हें इस की सुंदरता का ज्ञान हुआ है।

अत: जलसा जहां अपनों ईमान में मजबूती और भाईचारे को बढ़ाने का साधन बनता है वहाँ दूसरों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बताने का भी माध्यम बनता है। जलसे के दूसरे दिन भाषण के दौरान साल भर में अल्लाह तआला के फज़्लों की जो बारिश हुई होती है उस का सारांश रूप से उल्लेख किया जाता है और अल्लाह तआला के अपार फज़्लों का आभार व्यक्त किया जाता है। हम देखते हैं कि अल्लाह तआला इस धन्यवाद पर अल्लाह तआला के फज़्लों की बारिश और अधिक शुक्रिया के लिए जलसा के दिनों में ही शुरू हो जाती है। इसकी एक अभिव्यक्ति ग़ैर-मेहमानों की जलसा के बारे में अभिव्यक्ति भी है।

इस समय मैं सारांशत: कुछ अभिव्यक्तिएं आपके सामने रखूंगा जिससे पता चलता है कि जलसा के बरकतों का दूसरों पर भी कितना असर होता है।

बेनिन के एक मेहमान वैलेंटिनो होदे (Valentine Houde) साहिब जो कि आठ साल मंत्री रह चुके हैं और वर्तमान में संसद के सदस्य हैं जलसा में शामिल हुए थे। कहते हैं कि मैंने जलसा सालाना से वह कुछ हासिल किया है जो बहुत बड़ी राशि खर्च करके भी प्राप्त नहीं कर सकता था। एक शांत और आध्यात्मिक माहौल था जिसमें मुझे रहने का अवसर मिला। मैंने आज तक इतना संगठित जलसा नहीं देखा हैं, जिनमें लगभग 40,000 के लगभग लोग शामिल थे। विभिन्न राष्ट्रों और रंगों और नस्लों के लोग हैं, लेकिन फिर भी एक शांत वातावरण है। और न कोई लड़ाई झगड़ा है। हर कोई दूसरों की सेवा में व्यस्त है। छोटे बड़े, बूढ़े जवान, औरतें बच्चियां सबसे उच्च नैतिकता के साथ दूसरे के आराम के लिए काम कर रहे हैं। यह मेरे लिए एक बड़ी बात है और यह आश्चर्य की बात है कि इतना बड़ी भीड़ में न कोई पुलिस है और न ही कोई फौज दिखाई दी। चारों तरफ, जमाअत अहमदिया के स्वयंसेवक काम कर रहे थे। मैं सोच रहा था कि आज के युग में निस्वार्थ हो कर कैसे काम करना संभव हो सकता है। फिर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि यह सब कुछ जमाअत अहमदिया में ख़िलाफत के नेतृत्व की बदौलत ही संभव है जिसने जमाअत को बच्चों बुजुर्गों युवाओं और महिलाओं सब को इस रंग में प्रशिक्षण किया है और बचपन में ही उन्हें जलसा की व्यवस्था सिखाना शुरू देते हैं। कहते हैं कि मैं कह सकता हूँ कि जमाअत अहमदिया जिस इस्लाम को दुनिया में पेश करती

है और जिस रंग में अपने सदस्यों को प्रशिक्षित कर रही है बहुत जल्द दुनिया इस्लाम अहमदियत में प्रवेश कर जाएगी और अहमदियत ही दुनिया में सबसे बड़ा धर्म हो जाएगा। (अहमदियत तो धर्म नहीं इस्लाम ही दुनिया में सबसे बड़ा धर्म होगा जो अहमदियत के माध्यम से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा फिर नए सिरे से स्थापित हो जाएगा।) कहते हैं कि जमाअत अहमदिया जो शिक्षा प्रस्तुत करती है दुनिया को इस की वास्तविक यथार्थवादी तस्वीर यहां जलसा में शामिल हो कर देखने को मिलती ही मिली। मैं इस जलसा की हसीन यादों को साथ लेकर लंदन से वापस लौट रहा हूं। ये क्षण मेरे लिए अविश्वसनीय और यादगार यादें हैं।

फिर बेनिन, के ही एक मेहमान चनवानो पासकल (Tchinwanu Pascal) साहिब जो बेनिन के वज़ीर planning and development में उच्च पद पर हैं। कहते हैं मैंने कई सम्मेलन देखे हैं। उन में शामिल हुआ हूं लेकिन मैंने आपकी जमाअत की तरह नियमित और सफल जलसा कभी नहीं देखी है। इस जलसा में सभी कार्यरत काम करने वाले अपनी जिम्मेदारियों को बहुत अच्छी तरह से जानते थे और इन कर्तव्यों को बहुत उत्तम रूप से अदा कर रहे थे। चालीस हज़ार की संख्या को खाना खिलाना यह आश्चर्यजनक था। लेकिन सबसे बड़ी और अविश्वसनीय बात यह है कि सभी खाना पकाने और भोजन खिलाने वाले स्वयंसेवक थे। अगर सारी दुनिया में इस भावना के तहत काम किया जाए तो मैं आश्वस्त कर सकता हूं कि दुनिया में लड़ाई समाप्त हो सकती है और मानव जाति की समस्याओं का अंत हो सकता है। मैं जमाअत अहमदियत की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। उसका बच्चा, बड़ा, युवा, बूढ़ा और औरतें सब संगठित और सभ्य लोग हैं।

हैती के राष्ट्रपति का प्रतिनिधि यूसुफ पियरे (Joseph Pierre) साहिब आए हुए थे। कहते हैं यह जलसा मेरे जीवन का एक बड़ा अनुभव था जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। श्रमिकों के अनूठे काम ने मेरी आंखें खोल दी हैं, बल्कि इस्लाम के बारे में मेरे विचार मूल रूप से बदल गए हैं।

फिर आइवरी कोस्ट से सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायाधीश तोरे अली साहिब आए थे जो आइवरी कोस्ट की राष्ट्रीय कांस्टीट्यूशनल काउंसिल के सलाहकार भी हैं। कहते हैं ख़ुद भी मुसलमान हूं और पिछले बीस वर्षों से विभिन्न इस्लामी फिर्कों के धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका मिल रहा है लेकिन मुझे इन बीस वर्षों में इस्लाम का वह ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ जो जलसा के इन तीन दिनों में हुआ है। तीन दिनों में, मुझे प्राप्त आध्यात्मिक विकास पिछले बीस वर्षों में नहीं मिला था। कहते हैं कि ग़ैर-अहमदी उल्मा के पास कुछ भी नहीं है। अगर कोई इस्लाम के बारे में वास्तविक शिक्षा प्राप्त करना चाहता है, तो जमाअत अहमदिया के पास आए। फिर कहते हैं कि जलसा में जिस तरह स्वयंसेवक डयूटियाँ देते हैं इसी से पता चल जाता है कि अहमदियों को ख़िलाफत से बहुत प्यार है और इसी प्यार की वजह से वह अपने ख़लीफा की सही आज्ञाकारिता करते हैं और आपस में बहुत प्यार से रहते हैं। यह प्यार एकजुटता और एकता है। यही कारण है कि वे इस्लाम की सही रंग की सेवा कर रहे हैं। किसी अन्य मुस्लिम संप्रदाय के पास ऐसा नेता और गठबंधन नहीं है। कहते हैं कि भविष्य में भी आध्यात्मिक जलसा में शामिल होऊंगा, बल्कि मैं अपनी पत्नी को भी लाऊंगा।

फिर बेलीज का एक पत्रकार औरत सहार वास्क्यूज़ (Sahar Vasquez) साहिबा हैं। कहती हैं जब मैं मियामी से लंदन वाले जहाज़ पर बैठी तो मेरे मन में भय और डर तथा आतंक के कई विचार आने लगे। ये विचार इसलिए नहीं थे क्योंकि मैं सात घंटे की लंबी उड़ान में बैठ गई थी। इसके बजाय, मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने अगले तीन दिनों मुसलमानों के बीच में बिताऊंगी। कुछ मुसलमान दुनिया भर में सबसे बुरी आतंकवादी घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार हैं। मुझे एहसास हुआ कि मैं अभी वापस नहीं जा सकती। जहाज़ तो उड़ गया। अत: मुझे इस बात का सामना करना पड़ेगा। इसलिए मैंने दुआ की कि मैं किसी भी आतंकवादी हमले का शिकार न बन जाऊं। यह स्पष्ट है कि मैं किसी हमला का शिकार नहीं हुई, लेकिन तथ्य बिल्कुल विपरीत था। मुझे तो यहां राजकुमारी की तरह रखा गया था। जलसा सालाना की प्रतिक्रयाऐं मेरे जीवन में सबसे अच्छी प्रितिक्रयाऐं हैं। मैंने कई लोगों से मुलाकात की है, लेकिन मुझे कभी भी अहमदियों जैसे सहानुभूतिपूर्ण लोग नहीं मिले। मैंने एक महान और अद्‌भुत जमाअत को पाया। मुझे नम्रता और प्यार के उच्च मानकों का पालन करने का अवसर मिला। हर दिन बहुत शानदार था। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं यहां से कई दोस्तों और यादों के साथ जा रही हूं। यह वास्तव में इस प्रकार का अनुभव था कि मैं कभी नहीं भूलूंगी।

फिर, बेलज़ शहर की मेयर, बर्नार्ड जोसेफ (Bernard Joseph) साहिब कहते हैं कि मेरी जलसा सालाना का यह पहला अनुभव बहुत रोमांचक और अच्छा था। मैं तीन दिन अहमदियों के भाईचारे आपसी प्यार और मानवता के सेवा से बहुत प्रभावित हुआ हूं। मैं एक ऐसे देश से आया हूं जहां हमें कई सामाजिक मुद्दों का सामना करना पड़ता है। मुझे लगता है कि इन सभी सामाजिक मुद्दों से छुटकारा पाने के लिए हमें अपनी लोकल जमाअत अहमदिया ब्लेज़ से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए। कहते हैं कि मैं यहां से बहुत अच्छी यादें ले कर जा रहा हूं और उन सम्बन्धों को भी जो इन तीन दिनों के भीतर बने हैं। निवास भोजन और यात्रा आदि के लिए सभी व्यवस्था बहुत अधिक थीं। कारों के ड्राइवर, हवाई अड्डे पर स्वागत करने वाले कार्यकर्ता, इसी तरह जलसा सालाना दौरान पानी पिलाने की सेवा करने वाले ड्यूटी देने वाले बच्चे, पार्किंग के कार्यकर्ता, खाना पकाने वाले और सभी ऐसा प्रशासन जो पर्दा के पीछे सेवा करने की तौफ़ीक़ पा रही थी उन सभी ने इस जलसा को बहुत ही यादगार बनाया है।

फिर इटली से एक प्रोफ़ेसर, युस्तूला कुंसा बलदा (Justo Lacunza Balda) ये कैथोलिक मिशनरी पादरी हैं और पूर्व पोप के सलाहकार भी रहे हैं। कहते हैं कि मैंने इस जलसा में तीन बातें विशेष रूप से नोट्स की हैं। इस तो विभिन्न राष्ट्रों का आपस में इस तरह प्यार से मिलना और किसी तरह का पर्दा न होना आश्चर्यजनक है और दुनिया में कहीं इस तरह का दृश्य नज़र नहीं आता। दूसरा इस जलसा में मुझे बहुत शान्ति नज़र आई। किसी प्रकार की बैचेनी नहीं थी। और तीसरी बात यह है कि समय के ख़लीफा के ख़िताब अपने अन्दर बहुत स्पष्ट सन्देश रखते हैं और उन से हमारे लिए बहुत व्यावहारिक नसीहतें हैं।

फिर फिलीपींस की एक मेहमान ऐलेना बूलस सहिबा। इस समय अरब समाचार के लिए काम करती हैं और पिछले साल मनीला बुलिटेन के पत्रकार के रूप में जलसा में शामिल हुई थीं। इस साल, फिर से, इसे व्यक्तिगत खर्च से शामिल हुई हैं। कहती हैं कि यह मेरा जलसा सालाना शामिल होने का दूसरा अनुभव है। मुझे कहना पड़ेगा कि हर साल, जलसा सालाना के प्रबन्धनों तथा दूसरी बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है इस तरह लोगों के ईमान की गुणवत्ता को देखते हुए, और विशेष रूप से इस बात ने कि किस प्रकार विभिन्न जातियों तथा प्रजातियों के लोग जलसा सालाना के माहौल में आकर घुल मिल जाते हैं और किसी भी देश या जातीयता में के आदमी को हरगिज़ फर्क नहीं पड़ता। यही पारस्परिक प्रेम और भाईचारा है जो आपके संदेश को एक व्यावहारिक रंग देता है जो किसी भी भाषण से प्रभावी और स्थायी प्रभाव देने जा रहा है। मुझे पूरा भरोसा है कि जलसा में शामिल होने वाले इसी मुहब्बत और बराबरी के परिवेश को अपने अपने देशों में वापस ले कर जाते हों और इस प्रकार, जलसा में शामिल सभी देश इस माहौल से फायदा उठाने वाले हों। कहती हैं कि मुझे लगता है कि अधिक से अधिक लोगों को अहमदिया जमाअत के साथ जलसा के वातावरण में कुछ दिन बिताने चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोगों को पता चल सके कि प्रेम और बराबरी किसे कहते हैं और इस्लाम का असली चेहरा कितना सुंदर है।

जापान से आने वाले प्रतिनिधिमंडल में शामिल एक महिला योकीको कोविंडो (Yukiko Kondo) साहिबा मेरा जो महिलाओं का भाषण था उसके बारे में कहती हैं कि महिलाओं के ख़िताब से पता चलता है कि समय के ख़लीफा की नसीहतें, इमाम जमाअत अहमदिया की नसीहतें वे संरक्षण (Protection) हैं जिन की छाया तले अहमदियत छाया तरक्की कर रही है। परिवारों को जोड़ना तथा मशीनी दुनिया से बाहर निकलना वास्तव इस समय दुनिया की सब से बड़ी ज़रूरत है। कहती हैं कि आजकल धर्म से दूरी की प्रवृत्ति है, लेकिन हम यह सोच रहे थे कि वह कौन सी शक्ति है, जो जमाअत अहमदिया को लोगों में धर्म की सेवा री भावना तथा जोश को स्थापित रखे हुए है। यह सवाल हमारे दिमाग में छाया हुआ था लेकिन जलसा के पहले दिन ही दुआ में शामिल होकर और इमाम जमाअत अहमदिया की नसीहतों को सुनकर ईमान हो गया कि दुआ ही वह शक्ति है जो जमाअत अहमदिया और दुनिया भर के बीच अन्तर पैदा कर रही है। जलसा में हमें बार बार दुआ करने का अवसर मिला। दुआ के बाद हम ने देखा कि हमारे दिल भी हल्के हुए हैं। और हमार रूह को भी ताज़गी प्राप्त हुई है। फिर कहते हैं कि जलसा के मध्य में मौसम गर्म रहा। परन्तु हम ने नहीं देखा है कि मौसम की गर्मी के कारण लोग उकताहट का शिकार हुए हों। काम करने वालों के चेहरे पर मुस्कुराहट थी। खाना के मध्य में एक उच्च आदर्श था। जब मुझे पता चला कि पानी पिलाने वाले बच्चों से लेकर धोने के कमरे की सफाई

करने वाले काम करने वाले तक अक्सर अपनी दिली ख़ुशी से यह सेवाएं कर रहे हैं तो मैं उन्हें ईर्ष्या से देखती और दुआ करती कि खुदा उन सब से राज़ी हो जाए जो लोगों के आराम के लिए अपना आराम त्याग कर रहे हैं।

ग्वादे लोप के एक नए अहमदी पेटरस म्याको (Patrice Mayeko) साहिब हैं। कहते हैं कि मैंने अपने जीवन में ऐसा कोई कार्यक्रम कभी नहीं देखा है। तकरीर के विभिन्न विषय समय की ज़रूरत के अनुसार थे और विशेष रूप से मेरे लिए बहुत प्रभावशाली था। जलसा सालाना का प्रबन्ध एक चलने वाली मशीन की तरह था जिस का प्रत्येक पुर्ज़ा अपने स्थान पर था। और सब काम करने वाले मिल कर इस मशीन को उत्तम रूप से चला रहे थे। प्रत्येक काम करने वाला अपने काम से परिचित तथा जानने वाला लग रहा था। फिर कहते हैं कि जलसा में आयोजित की जाने वाली बहुत सी प्रदर्शिनियां बहुत लाभदायक थीं। विशेष रूप से आर्काइव तथा मख़ज़ने तस्वीर और रियूयू ने मुझे बहुत प्रभावित किया। ये प्रदर्शन बहुत पसन्द आए। और उन्होंने मेरे अहमदियत के बारे में ज्ञान को बहुत बड़ा दिया। इस जलसा में शामिल होकर मैं अल्लाह तआला का और भी शुक्र अदा करता हूं। जिस ने मुझे इस प्रकार की बरकतों वाली जमाअत के साथ जुड़ने की तौफीक प्रदान की। एक कमी की तरफ भी उन्होंने इशारा किया है कहते हैं कि इस जलसा की बहुत सी खूबियों से हट कर मेरी नज़र में अंग्रज़ी के मुकाबला में मैंने फ्रेंच भाषा में प्रोग्रामों की कमी महसूस की है।

फ्रेंच प्रोग्राम बनाने वाले इस बात को नोट कर लें। कि या तो फ्रेंच प्रोग्राम हों या फिर जो प्रोग्राम होते हैं इन का अनुवाद भी किसी प्रकार से हो। यह भी अल्लाह तआला का फज़ल है कि कमज़ोरियों की निशानदही भी साथ साथ हो जाती है।

जापान से आए हुए एक मेहमान यूशीदा (Yoshida) साहिब जो कि बुद्ध धर्म के चीफ हैं उन्होंने वैश्विक बैअत के हवाले से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बैअत का आयोजन देख कर अनुभव हुआ कि हमारा एक ख़ुदा है। उस के आदे झुका जाए तो दिलों को आराम मिलता है। और गुनाह धुल जाते हैं। और अगर सब इंसान मतभेद समाप्त कर के एक होना चाहें तो हो सकते हैं। फिर कहते हैं कि बैअत के आयोजन में शामिल हो कर अपने आप आंखों से आंसू जारी हो गए। और हम सिज्दे में गिर गए और हमें लगा कि वास्तव में हमारे गुनाह धुल रहे हैं।

फिर इंडोनेशिया एक प्रोफेसर, प्रो मुहम्मद साहिब है। यह कहते हैं कि जलसा सालाना का आयोजन एक बहु महान आश्चर्य करने वाला कार्यक्रम है। लोग इस जलसा में विभिन्न देशों से आए हुए थे इस प्रकार लग रहा था की सारी दुनिया को एक स्थान पर जमा कर के उम्मते वाहिदा बना दिया गया था। जिस तह यहां स्वयं-सेवक काम कर रहे थे। चारों तरफ इस्लामी भाईचारे का नज़ारा नज़र आ रहा था। और चारों तरफ शान्ति का सन्देश था। यह एक बहुत बड़ा सबूत है कि जमाअत अहमदिया हर क्षेत्र में सेवा करने वाली जमाअत है। जलसा के दौरान, हर तरह के आदमी से मुलाकात हुई और उनमें से कुछ बहुत बड़े बड़े व्यक्ति थे। महत्त्वपूर्ण थे। दूसरी तरफ, इस्लामी नैतिकता का विचार महत्त्वपूर्ण था और हर तरफ इस्लामी भाईचारा का बोलबाला था। जहां तक मेहमान नवाज़ी का प्रश्न है तो इस का वर्णन करना सम्भन नहीं है। काम करने वाले मेहमानों का बहुत सम्मान करते हैं। बहुत प्रसन्नता से व्यवहार करते हैं। ऐसा लगता है कि हम अपने घरों में रह रहे थे। और जलसा सालना की जो तकरीरें थीं जो आसानी से समझ आ रही थीं। कहते हैं मेरी परामर्श यह है कि इस प्रकार के महान जलसा का आयोजन इंडोनेशिया में हो जिस में समय के ख़लीफा हाज़िर हो यह हमारे लिए गर्व की बात हो।

अगर करना चाहें तो फिर अपने देश में लोगों को इस बात के लिए तैय्यार करें वहां तो जमाअत का विरोद्ध में बढ़ रहे हैं।

फिर इंडोनेशिया की एक मेहमान औरत हैं जो मुस्लिम महिलाओं के संगठन की नेता है। कहती हैं कि मैं जमाअत अहमदिया की कई किताबें पढ़ चुकी हूं और जमाअत का पर्याप्त ज्ञान है लेकिन जब जलसा सालाना में शामिल हुई और समय के ख़लीफा का भाषण अपने कानों से सुने तो बहुत प्रभावित हुई। वास्तव में जमाअत अहमदिया के लोग व्यावहारिक उल्मा हैं। जिस तरह से लोग समय के ख़लीफा के विचारों को ध्यान से सुनते हैं, यह सब देखकर अक्ल हैरान रह जाती है। लोग कहते हैं कि जमाअत अहमदिया कुफ्र और गुमराही में पड़ी हुई है और दूसरों को भी गुमराह कर रही है लेकिन वास्तविकता यह है कि यही सच्चे मुसलमान हैं जो नमाज़ों के पाबन्द हैं। अल्लाह तआला और उसके बन्दों के अधिकारों बहुत अच्छी तरह से निभा रहे हैं। एक दूसरे का सम्मान करते हैं। प्रत्येक काम करने वाला अपनी अपनी ज़िम्मेदारी को नेकी तथा तक्वा को समक्ष रखते हुए अदा कर रहा है। यह सारा नज़ारा देख कर बहुदत प्रभावित हुई हीं और कहती हैं कि ज़माना के इमाम तथा ख़िलाफत की बरकतों का परिणाम लगता है।

इंडोनेशिया से ही एक गैर-अहमदी विद्वान था, जो वहां के विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के प्रमुख भी है। वह कहते हैं कि मैंने पहली बार इस तरह का एक जलसा देखा है, जिस में हर मामले में और हर पहलू में, आध्यात्मिक पक्ष को प्राथमिकता दी गई है कहते हैं कि मैं इस जलसा को एक सुनहरा जलसा मानता हूं, क्योंकि दुनिया भर के लोग ख़िलफत के निकट आस पास परवानों की तरह जमा होते हैं। मैं एक इंडोनेशियाई के रूप में ख़लीफतुल मसीह की कोशिशों की प्रशंसा करता हूं जिन्होंने सारी दुनिया के लोगों को एक स्थान पर जमा कर के भाईचारा का नमूना प्रस्तुत किया है।

वास्तव में तो ख़िलाफत इस काम को आगे बढ़ा रही है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिसके लिए भेजे गए थे और अल्लाह तआला करे कि उन्हें ज़माने के इमाम और युग के महदी को मानने भी तौफ़ीक़ मिले।

फिर कहते हैं कि यह सच्चा इस्लाम है और यही वास्तविक भाईचारा है। जमाअत अहमदिया एक अकेला वैश्विक संगठन है जिसका उदाहरण कहीं भी नहीं मिलता है। जमाअत की अहमदिया का लक्ष्य बहुत अच्छा है। हर दिल में कील की तरह गड़ जाता है। समय के ख़लीफा के हर ख़िताब में, कुरआन करीम, हदीस और सुन्ने नवबी के आलोक में बहुत ही उत्तम रूप से इस्लामी शिक्षाएं वर्णन की गई हैं। जलसा सालाना यद्यपि तीन दिन है परन्तु बरकतों के लिहाज़ से यह तीन दिन भरपूर हैं। हम इस के लिए आप के बहुत आभारी हैं।

गिनी कुरेकरी के एक प्रांत के राज्यपाल सारंग बे-कुमारा साहिबा शामिल हुई थीं। यह कहती हैं कि मैंने इस से पहले इस से अच्छा और संगठित कार्यक्रम नहीं देखा था। सभी देशों से, हर रंग और जाति के लोग बड़ी संख्या में शामिल हुए जो सर्वश्रेष्ठ इस्लामी नमूना पेश कर रहे थे। प्रेम और मुहब्बत की असाधारण अभिव्यक्ति जो केवल शाब्दिक नहीं थी, लेकिन व्यावहारिक दिखाई दे रहा था और महसूस हो रहा था। प्रत्येक वह चीज़ जिस की ज़रूरत होता वह समय पर उपलब्ध थी। कहती हैं कि मुझे सारी तकरीरें सुनने का अवसर मिला। और यह महसूस होता था कि इस समय की ज़रूरत के अनुसार तैय्यार की गई हैं। विशेष रूप से इमाम जमाअत अहमदिया की तकरीरें असाधारण थीं। ख़ुत्बा जुम्अः में जो मेहमानों तथा मेज़बानों को हिदायतें दी गई थीं अगर हम इन हिदायतों पर अमल करें तो हमारी सारी समस्याएं जो बिना कारण के पैदा होती हैं। प्यार मुहब्बत तथा अपने अपने क्षेत्र में रहते हुए हल हो जाएं। कहती हैं इन तीन दिनों में मैं तो यही समझती हूं कि अहमदिया जमाअत एक व्यवस्थित और इमाम के इशारा पर चलने वाली जमाअत है, और यही इस्लाम की सुंदर शिक्षा है, जिस पर अनुकरण करते हुए हम आज एक जमाअत बन सकते हैं। अंत में,कहती हैं कि दुआ का निवेदन भी करती हूं कि हमारे देश में अल्लाह तआला शान्ति की स्थापना करे। और वास्तविक इस्लाम की स्थापना हो।

होंडुरास के एक पत्रकार मानोलो जूज़ इस्काटो (Manolo Jose Escoto) साहिब एक टीवी चैनल के साथ जुड़े हुए हैं। कहते हैं कि जब मुझे एक मुस्लिम जलसा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था, तो जिज्ञासा पैदा हुई। क्योंकि वैश्विक स्तर पर कम ज्ञान के कारण, मुसलमानों के बारे में बुरे और नकारात्मक विचार व्यक्त किए जाते हैं। लेकिन मैं दृढ़ता से व्यक्त करना चाहता हूं कि इस नकारात्मक व्यवहार का कारण अज्ञानता है। मेरे जैसे हजारों लोग हैं जो मुस्लिमों की सही शिक्षा और भावनाओं को नहीं जानते हैं। अब, अहमदिया जमाअत के चलते, मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा। जलसा सालाना के माहौल में रहते हुए, मुझे समझ में आया कि लोगों के बारे में को ई द्वैष पूर्ण राय स्थापित करने से पहले उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानना आवश्यक है। जलसा का केन्द्रीय संदेश शांति का संदेश है जो हर स्तर के लोगों तक पहुंचना चाहिए। इसी प्रकार से मुझे अच्छे सहानुभूति करने वाले लोगों से मिलने का अवसर भी प्राप्त हुआ जिन्होंने समस्त मेहमानों के दिल खोले हुए थे।

ग्वाटेमाला से एक लेडी पत्रकार गैलाडीस रामिरेज़ (Galadys Ramirez) साहिबा हैं। यह कहती हैं कि मुझे जमाअत अहमदिया बर्तानिया के जलसा सालना में शामिल होकर बहुत खुशी हुई है जमाअत अहमदिया को करीब से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। इस्लाम के बारे में बहुत सारी ग़लत फहमियां दूर करने का अवसर प्राप्त हुआ। वास्तविक इस्लाम का शिक्षा प्राप्त हुई। मेरा दिल ख़ुशी से भरा हुआ है ति जलसा सालाना के सारे शामिल होने वालों ने मेरे साथ बहुत मान तथा सम्मान का व्यवहार किया। औरत होने की हालत में मैंने किसी क्षण भी महसूस नहीं किया

कि अपने घर से दूर हूं। और अकेली हूं। बल्कि इस के विपरीत इस स्थान पर मैंने अपने आप को सुरक्षित तथा दूसरों की नज़र में सम्माननीय महसूस किया। आपसी मुहब्बत तथा भाईचारा का अव्यवहारिक नमूना देखा । दुनिया के विभिन्न देशों के लोगों से मिल कर इस तरह महसूस हुआ कि सब एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले और हमदर्द हैं। हालांकि विभिन्न भाषाएं बोलते थे, लेकिन उनके व्यावहारिक नमूना ने भाषाओं के मतभेदों को भूला दिया। कहती हैं मैं इस शांतिपूर्ण इस्लामी समाज से बेहद प्रभावित हूं और मेरा ईमान है कि जमाअत अहमदिया के व्यक्ति वास्तविक शांति और सुरक्षा को व्यावहारिक रंग में स्थापना कर रहे हैं।

एक टीवी चैनल फोटोग्राफर आए हुए थे। कहते हैं कि यह एक अविस्मरणीय अनुभव है। कार्यकर्ता से लेकर अधिकारी तक सब नेक भावनाओं और प्यार और मुहब्बत का व्यवहार किया। जलसा की व्यवस्था और तकरीरों ने मेरे मन को प्रकाशित किया। व्यावहारिक रूप में आप लोगों ने मुझे बताया कि वास्तविक मुसलमान कौन होता है। वह कहते हैं 2015 ई में जमाअत से परिचय हुआ था लेकिन यहां आकर मुझे लगा कि अपने घर में रह रहा हूँ। एक इंसान होने के नाते प्रत्येक का कर्तव्य है कि दूसरों से सम्मान से व्यवहार करे और ज़रूरतमंदों की सहायता करे। कहते हैं कि इस जलसा से मुझे यह सबक मिला है कि हम सब मिल कर प्रेम तथा भाई चारा से काम करें तो महान काम कर सकते हैं।

मैक्सिको से एक नई बैअत करने वाली एलिज़ाबेथ पेरेरा (Elizabeth Parera) साहिबा कहती हैं कि मुझे अहमदी हुए केवल एक वर्ष हुआ है और मैं इस्लाम के बारे में सीख रही हूं। यह एक ऐसा धर्म है जो हमारे देश में अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता और इस की वजह मीडिया है, लेकिन मैं जानती हूं कि इस्लाम शांति का धर्म है लेकिन मेरे घर वाले मुझे यहाँ आने से रोक रहे थे और मुझे डरा रहे थे मगर यहाँ पहुँचने उसके बाद मुझे इस का विपरीत मिला। कहती हैं एयरपोर्ट पर हमें रिसीव करने से लेकर जलसा सालाना के तीनों दिन तक जो स्वयंसेवकों की भावना और व्यवहार मैंने देखा है मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ। अब मेरे दिल में जमाअत के भाई चारे और परिवारिक प्रणालियों के बारे में कोई संदेह नहीं है। कहती हैं जो भावनाएं मैं अपने दिल में ले कर जा रही हूं, उन को मैं मेक्सिको वापस जा कर प्रयोग करूंगी और लोगों तक जमाअत अहमदिया का संदेश पहुंचाऊंगी।

फिर मैक्सिको की ही एक नई बैअत करने वाली लॉओ राबरीतो सोबेरीनस (Laura Brito Soberanis) साहिबा हैं। कहती हैं कि स्वयंसेवक कभी कभी मेरी बात नहीं समझ सकते थे। लेकिन मुझे यहां आकर पता चला कि भाषा का अन्तर अहमदियों के मध्य सम्बन्धों में रोक नहीं बन सकता। ख़ुदा तआला के प्यारे ने हमें एक बना दिया है। मैं इस प्रकार महसूस कर रही हूं कि मानो अपने घर वालों के साथ हूं और समय के ख़लीफा के ख़िताबों को सुन कर मैंने अपनी समीक्षा की कि मुझे में कौन कौन सी कमियां हैं। और अब मुझे विश्वास हैं कि मैं उचित स्थान पर हूं। और खुदा तआला ने मुझे हिदायत का मार्ग दिखाया है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि जिस तरह मेरा ईमान मज़बूत हुआ है। मेरे घर वाले भी इस्लाम को जानें और उन को ईमान भी पक्का हो।

फिर मुहम्मद मम्बूहो अज़ीज़ (Mbohu Azize) साहिब कैमरून से हैं। कहते हैं कि मैं पिछले साल भी जलसा सालाना में शामिल हुआ था। इस बार पहले की तुलना में हर विभाग ने तरक्की की है। परिवहन और आवास व्यवस्था बहुत अच्छी थी। खाद्य व्यवस्था बहुत आश्चर्यचकित है। इतनी बड़ी संख्या को दो घन्टे में खाना खिलाया जाता है। कोई लड़ाई और शोर नहीं है। हर अक जलसा गाह में जाता है और प्रोग्राम सुनता है यह विशेष चीज़ है जो सांसारिक कार्यक्रमों में नहीं देखी जा सकती है। ख़ुद्दाम जितनी भावना और प्यार तथा मुहब्बत से काम करते हैं इस का उदाहरण नहीं मिलता। जिस जमाअत के पास इस प्रकार के फिदा होने वालों हों वह जमाअत सदैव तरक्की करती है। कहते हैं कि विनीत पेशे के लिहाज़ से एक पत्रकार है। एम.टी.ए के कर्मचारियों के साथ मीटिंग हुई और हमें वहां भी बहुत मज़ा आया। हमारी ज़रूरत की हर चीज़ मौजूद थी। जो चीजें दुनिया के निजी और सरकारी संस्थानों में भी उपलब्ध नहीं होतीं। जमाअत का सन्देश ग़ैरों तक किस प्रकार पहुंच रहा है इस का अनुमान मुझे ग़ैर-अहमदी मेहमानों की प्रतिक्रिया से हुआ। हर किसी ने जमाअत के प्यार और मुहब्बत की शिक्षा की सराहना की। फिर यह कहते हैं कि समय के ख़लीफा ने जो औरतों में तकरीर की वह हमारी नई नस्ल की तरबियत के लिए बहुत ज़रूरी है। सोशल मीडिया का क्या उपयोग किया जाना चाहिए? ये सब बातें इस समय महत्त्वपूर्ण हैं। अगर हम अपने बच्चों को इस माहौल से नहीं बचाते हैं तो वे मानवता और इस्लाम से बहुत दूर चले जाएंगे। हमें इस शिक्षा को अपनाना है। फिर वे कहते हैं कि आखिरी भाषण में फहशा की व्याख्या बहुत प्रभावी थी। यह सुनने के बाद, ऐसा लगता था कि हम सभी इन बुराइयों से पीड़ित थे। और ऐसे कई लोग हैं जो नेक कहलाते हैं लेकिन उनके कार्य नेक नहीं होते। अगर हम समय के ख़लीफा की इस व्याख्या को समझें और इसका पालन करते हैं, तो हम अपनी नई पीढ़ी को शुद्ध समाज दे सकते हैं। शब्द फहशा की इस व्याख्या में मुझे हिला कर रख दिया है। यह इस प्रकार का बेहतरीन बिन्दु है जिसे मैं अपने जीवन का एक हिस्सा बना कर रखूंगा। कहते हैं मैंने विभिन्न प्रदर्शनियों को भी देखा है। जमाअत के इतिहास का पता चला। जो क़ौमें अपने इतिहास को नहीं भूलती वे हमेशा तरक्की करती हैं। रियूयू आफ रिलीजंस एक शताब्दी से संदेश पहुंचा रहा है, जो जमाअत अहमदिया ने आरम्भ किया था। कहते हैं मैं नियमित रूप से इसे पढ़ता हूं और बहुत मानक निबन्ध होते हैं और इसी तरह ह्यूमेनस्टी फर्सट की सेवाएं भी बहुत असामान्य हैं।

आइसलैंड के प्रतिनिधिमंडल में शामिल एक मेहमान महिला एमीलीता औरडोनीज़ (Emelita Ordonez) साहिबा कहती हैं कि जलसा में शामिल होने से मेरे ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई और जमाअत अहमदिया को बेहतर रंग में समझने लगी हूँ। दुनिया भर के लोगों से मिलना और संवाद करना बहुत दिलचस्प था। मैंने हर जगह शांति मुहब्बत और भाईचारा महसूस किया। जलसा के भाषण ईमान वर्धक थे और exhibitions देखकर बहुत आनंद महसूस हुआ यद्यपि प्रदर्शनी में शहीदों की तस्वीरें देखकर दु:ख भी लगा क्योंकि यह अत्याचार केवल धार्मिक मतभेद की वजह से किया गया है और किया जाता है। तीसरे दिन बैअत के आयोजन ने दिल पर असाधारण प्रभाव डाला और कई चीज़ों और विचारों का शब्दों में वर्णन करना सम्भव नहीं है।

मैसेडोनिया से एक पत्रकार टोनी अजतोव्स्की (Toni Ajtovski) कहते हैं कि जलसा में जिस बात ने दिल पर सब से अधिक प्रभाव डाला वह यह समय के ख़लीफा के खुत्बे थे। विशेष कर के तरबियत औलाद के बारे में आप का भाषण और उन की निगरानी की तरफ ध्यान देना चाहिए। और खासकर मोबाइल आदि के उपयोग का उल्लेख किया कि कैसे यह बातें परिवार की इकाई के लिए हानिकारक साबित हो रही हैं। यह एक वैश्विक संदेश था। क्योंकि दुनिया के हर परिवार में एक ही समस्या है। अगर कोई परिवार परिवार के रूप में एक साथ न रहे तो लोगों का आपस में सम्पर्क न हो तो वह बिखर जाता है। और परिवार के बिखरने से सारा समाज बिखर जाता है। और अच्छे भविष्य की गारंटी नहीं देता है।

जॉर्ज कैरिनो (Jorge Carino) साहिब फिलीपींस से आए थे। बड़े टीवी चैनल ए बी एस सी बी एन (ABS-CBN) के प्रसिद्ध मार्टिंग शो के मेज़बान हैं। यह कहते हैं कि यह मेरे जीवन में पहली बार था कि मैंने एक ही स्थान पर कई अलग-अलग देशों और रंगों के लोगों को देखा। हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी देश से हो चाहे लोग एक दूसरे को जानते हों या नहीं एक दूसरे को देख कर मुस्कुरा रहे हैं और सलाम करते थे और सबसे बढ़कर यह कि उन के इकट्ठा होने का उद्देश्य केवल प्रेम और मानवीय मूल्यों को फैलाना था। कहते हैं पत्रकार के रूप मुझे असंख्य जलसे देखने का मौका मिला लेकिन जितना आराम, धैर्य और अनुशासन के साथ जलसा सालाना यूके की व्यवस्था और कार्रवाई हुई है इसकी मिसाल मैंने पहले कभी नहीं देखी। स्वयंसेवकों ने हमें जिस सम्मान तथा प्यार से हमारा सत्कार किया है और हमारी सभी ज़रूरतों को ध्यान में रखा, उन्होंने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव डाला। कहते हैं कि यातायात नियंत्रण की बात हो या गर्मी को दूसर करने के लिए पेय पिलाना है, छोटे छोटे बच्चे बड़ी ज़िम्मेदारियों से यह ड्यूटि दे रहे थे। और कहते हैं मुझे बहुत खुशी हुई कि मैं इस कार्यक्रम में शामिल हुआ क्योंकि इस जलसा ने मेरे दिमाग को पहले से कहीं अधिक खोला है और मुझे एक नया दृष्टिकोण दिया है। जलसा मेरे जीवन में एक मील का पत्थर बनने की स्थिति रखता है। इस के

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

कारण से, मुझे एक नई संस्कृति एक नई सभ्यता को देखना का अवसर मिला जो फिलीपींस के कल्चर से भिन्न है।

फिर ग्रीक मेहमान, मर्सिया मोंटेनेहा साहिबा कहती हैं कि इस बिल्कुल असंभव है कि इस अनुभव को वर्णन किया जा सके, जो अठ्ठतीस हज़ार लोगों का हिस्सा बनते हैं और जो अमन के लिए दुआ करते हैं। जलसा के अवसर पर जो दया और प्रेम की भावना सब की तरफ से मिले यह अनुभव बहुत प्रभावित करने वाला था जिसने मेरी उम्मीदों को अधिक बढ़ा दिया है कि बावजूद हमारे मतभेद के कैसे मानवता शांति के नए युग में सहिष्णुता और एक समता के साथ प्रवेश करने की शक्ति है। जिस से हमारे मानवता की तरक्की में यह मानक नज़र आता है।

फिर कनाडा से एन्जसन्स (Indigenous) लोगों के जो प्रथम नागरिक कहलाते हैं उन का प्रतिनिधिमंडल भी शामिल था जिन्होंने सिरों पर अपने रिवायती बड़े बड़े ताज पहने हुए थे। उन के तीन कबीलों को चीफ और एक उन का यूथ लीडर शामिल था। उन के साथ लीडल मैक्स फिनडे (Max Fineday) कहते हैं कि हमें ख़ुद्दाम का जलसा में स्वयंसेवक के रूप में सेवा करने ने बहुत प्रभावित किया । हम वापस जाकर जल्द ही और अहमदी युवा और प्रथम राष्ट्र युवा के साथ मिल कर एक साथ प्रोग्राम करेंगे। अहमदी युवाओं जैसा संगठन मैंने किसी भी क़ौम में नहीं देखा, और जिस महारत से अपने काम करते हैं उस का उदाहरण नहीं है।

ख़ुद्दाम भी यह याद रखें कि इस प्रशंसा उन को और अधिक सेवा की तरफ ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए।

फिर एक प्रमुख रोगर रीडमेन (Roger Redman) कहते हैं कि मुझे धूम्रपान पीने की बहुत आदत है और हम लोग तंबाकू का उपयोग करते हैं बल्कि हमारे कबीले में यह है कि धूम्रपान और तंबाकू का उपयोग प्राथमिक राष्ट्र के लोगों का एक धार्मिक अंग है और ऐसा माना जाता है कि तंबाकू का उपयोग आध्यात्मिकता में तरक्की करने में एक विशेष कारक है। लेकिन जलसा सालाना के अवसर पर जब समय के ख़लीफा ने समुदाय के लोगों को बताया कि उन्हें धूम्रपान पीने से बचना चाहिए। तो चीफ ने कहा कि मैंने भी वादा कर लिया और इस बात को व्यक्त भी किया कि मैं जलसा के दिनों में सिगरेट पीने से बचूंगा, और फिर अपने वादा पर कायम रहे।

अत: यह बात अहमदियों के लिए भी एक सबक है, लेकिन किसी ने मुझे बताया कि जो लम्बी उड़ानें होती हैं दस बारा घंटे की उन में भी तो धूम्रपान वर्जित क्षेत्र होता है। उड़ान के दौरान, आप धूम्रपान नहीं कर सकते। उस समय भी आप धैर्य करते हैं तो जलसा में कर लेंगे तो सवाब भी होगा।

फिर कहते हैं कि समय के ख़लीफा के खिताब को सुन कर मेरी धारणा यह है कि अगर इस्लाम की शिक्षा प्यार करना, शांति फैलाना और मानवता से सहानुभूति है जैसा कि आप ने अपने संबोधन में वर्णन की है तो निश्चित रूप से एक अहमदी मुसलमान बनना पसंद करूंगा। और फिर चीफ ने यह भी कहा कि वह इस तरह के किसी भी वादे से पहले अपने बुज़ुर्गों से परामर्श करेंगे। क्योंकि ये लोग अपनी परंपराओं को बहुत संभाल कर रखते हैं।

फिर फर्सट नेशन के एक अध्यक्ष ली क्रोचिल्ड (Lee Crowchild) कहते हैं, कहते हैं जो इज्ज़त और मुहब्बत हमें इस जलसा पर मिली है वह हमारी सदियों पुरानी शिक्षा से समानता रखती थी जैसा कि हम एक दूसरे के साथ मुहब्बत और प्रेम से रहते थे हमारी तमाम जरूरतें पूरी की गई। कहते हैं कि मुसलमानों के बारे में एक राय अमेरिका वाले रखते हैं और एक राय कनाडा के लोग मगर बहुत अफसोस की बात है कि हमारे कुछ लोग भी मुसलमानों के बारे में सकारात्मक सोच नहीं रखते मगर अब मैं समझता हूं कि हम ख़ुद अपने शत्रु हैं। कहते हैं मैंने जमाअत अहमदिया में देखा है कि ना तो यह लोग एक दूसरे से झगड़ते हैं ना एक दूसरे से बहस करते हैं और ना ही एक-दूसरे के ख़िलाफ कोई बात करते हैं। अत: यह हर एक के लिए एक आदर्श हैं जो हमें प्रभावित कर रहे होते हैं

स्पेन के दल में शामिल (Emilo Lopez) साहिब कहते हैं कि मैं पहली बार जलसे में शामिल हुआ हूं जमाअत अहमदिया के साथ मेरा गहरा संबंध है जलसा बहुत ही दिलचस्प था और फिर दूसरों के लिए भी टॉलरेंस और इज्जत और शांति का संदेश था इसी तरह दूसरे धर्मों और मानवीय सम्मानों का भी एक अनोखा संदेश है अहमदियों का उदाहरण जिंदा रखने वाला है काश यह सम्मान श्रद्धा हर कोई अपना ले।

फिर समस्त जलसा के शामिल होने वालों का आचरण और आप लोगों की अच्छाई बयान करना मेरे लिए एक की पॉइंट है।

फिर स्पेन के ही एक और साहिब कहते हैं मुझे गहराई से सभ्यता और आपके धर्म को जानने का अवसर मिला है बहुत अच्छी मेहमान नवाज़ी थी। इसके अतिरिक्त तकरीरें भी बहुत दिलचस्प थी।

स्पेन के एक और साहिब कहते हैं कि जलसे में शामिल होने से इस बात का पूर्ण विश्वास हुआ कि वास्तविक इस्लाम का प्रबंध और खून खराबे से दूर का भी संबंध नहीं है।

जमीका से एक ग़ैर-जमाअत औरत ओडिया नेस्बेट (Ouida Nesbeth) साहिबा शामिल हुई अकाउंटेंट हैं। पढ़ी-लिखी औरत है कहती हैं कि मैं पिछले 5 साल से जमात अहमदिया से संपर्क में हूं इस समय के दौरान मेरा जमात के साथ संबंध और परिचय तो काफी था परंतु इस जलसा में शामिल होने के बाद इसमें बहुत वृद्धि हुई है और इस्लाम के बारे में मेरे ज़हन में जो भी शंका थी वह दूर हो गई है। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि औरतें और मर्द अलग-अलग थे एक तरफ से आरोप होता है परंतु औरतों को यह बात अच्छी लगी इस वजह से लोगों का ध्यान नहीं पड़ता ख़ुद उन्होंने स्वीकार किया है कि जब हम इकट्ठे होते हैं तो मर्दों की मर्दों की नजरें ठीक नहीं होती कहती हैं कि औरतें और मर्द अलग-अलग थे इस वजह से लोगों का ध्यान नहीं हटता है और लोग इस्लाम और इबादत पर ज्यादा ध्यान दे पाते हैं अत: अहमदी औरतें भी जो किसी वजह से किसी भी हीन भावना में पड़ी हैं उनको भी इसके कॉमेंट पर सोचना चाहिए।

इटली के प्रोफ़ेसर रफ़ाईला (Raffaela) साहिबा एक स्टडी सेंटर की डायरेक्टर है। कहती हैं कि बैअत के दौरान अहमदियों की जो ईमान की हालत थी वह दूसरों को भी महसूस हुई है। मैंने साइकोलॉजी पढ़ी है और मुझे इंसान के चाल चलन और आचरण से मालूम हो जाता है कि यह आदमी अपने ईमान के दावे में कितना संजीदा है और मुझे अहमदियों को देखकर विश्वास हो गया है कि आप लोगों के ईमान का स्तर बहुत बुलंद है जब उन्हें पता चला कि पिछले साल 6 लाख से अधिक बैअतें हुई हैं तो कहने लगे कि शुक्र है लोग जमात में शामिल हुए।

इटली की एक मेहमान औरत जो ओरिएंट टेस्ट है पूर्वी ज्ञान की माहिर हैं और वेटिकन की एक पत्रिका की पत्रकार भी हैं। कहती हैं कि जलसा पर आकर जमात के कामों का कुछ अंदाजा हुआ है। हमें दुनिया को एक ऐसी व्यवस्था और शांति वाली इस्लामी जमात की ख़बर देनी चाहिए। जमात अहमदिया मुसलमानों के मध्य बातचीत के ज़रिया से समस्याएं हल कराने के लिए बहुत कोशिशें कर रही है। आप लोगों के प्रोजेक्ट्स प्रोग्रामों और सेवा का ख़बर सारी दुनिया को होना चाहिए।

बेला रशयन यूनिवर्सिटी के वाइस रेकटर सरगई श्रावस्की साहब कहते हैं कि एक धर्म के जाने वाले के जिसे इस्लाम के बारे में निहायत थोड़ी सी बातें मालूम हैं।(धर्म का माहिर तो हूं लेकिन इस्लाम के बारे में बहुत थोड़ा ज्ञान है) परंतु इस जलसा सालाना में सम्मिलित होना मेरे लिए बहुत अधिक ना भूलने वाली बात और अनुभव को बढ़ाने वाला था। इस जलसे के परिणाम स्वरुप जो वास्तविकता मुझे पता चली वह यह है कि इस्लाम एक विश्वव्यापी धर्म है यह समस्त आम लोगों से सुनने में आता है परंतु हर एक इस बात पर विश्वास नहीं कर पाता। इन्हें कहीं तो इस्लाम के बारे में मालूमात की कमी है कहीं बहुत सी ग़लतफहमी है और कहीं इस्लाम की मुश्किल शक्लें हैं जो इस बात पर लोगों को यकीन करने नहीं देतीं कि यह विश्वव्यापी धर्म है परंतु जलसा सालाना का माहौल शंकाओं की तमाम दीवारों को गिरा देता है इस स्तर के किसी भी आयोजन में शामिल होने का यह मेरा पहला अनुभव है। इस में पहली बार मैंने मुसलमानों के परिवेश को निकट से और ध्यान से अध्ययन किया। इस जलसा

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

सालाना में बहुत दिलचस्प चीज़ें थीं। विभिन्न देशों के प्रतिनिधि राष्ट्रीय लिबास में मौजूद थे। जलसा सालाना के प्रबन्ध भी इंसान को आश्चर्य में डाल देते हैं। 200 आदमियों के आयोजन का इंतजाम करना हो तो मुश्किल हो जाती है लेकिन 38 हज़ार लोगों का इंतजाम उन्होंने किस तरह किया यह बात वास्तव में हैरत में डाल देती है। मैं सारे काम करने वालों का बहुत शुक्रिया अदा करना चाहता हूं उन्होंने जलसा के बेहतरीन प्रबंध किए हैं।

काम करने वालों के, सेवा करने वाला के बारे में यह भी बता दूं कि इस बार भी कनाडा से लगभग 140 ख़ुद्दाम काम को समेटने के लिए आए थे जिन्होंने अच्छा काम किया। इस के अतिरिक्त UK के ख़ुद्दाम थे उनका भी शुक्रिया। इसके अतिरिक्त तब्लीग़ी डिपार्टमेंट UK को भी इस साल सेमिनार और सवाल-जवाब की मज्लिसें लगाने का आयोजन मिला। अल्कुर्आन प्रदर्शनी कुरआन की सुन्दर शिक्षाओं का उजागर करना था। विभिन्न प्रकार के कुरआन प्रदर्शनी में रखे थे। इसी तरह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में तकरीर (speech contest) का प्रोग्राम था। हालैंड के राजनीतिज्ञ विलडरज़ (Wilders) द्वारा जो hate campaign चलाई गई है इसके जवाब में यह भाषण प्रतियोगिता हुई थी। कई ग़ैर-अहमदी और ग़ैर-मुस्लिम यूरोपीय लोगों ने भी भाग लिया।

एक महिला कैथरीन मेरी रोहन (Katherine Mary Rohan) साहिबा इसाई हैं। कहती है औरत होने की हैसियत से मुझे इस बात से दिलचस्पी है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की औरतों के बारे में क्या राय थी? वह एक ऐसे वक्त में आए जब कि यूरोप में अफरा-तफरी का समय था ऐसे जमाने में उन्होंने यह घोषणा की कि हम अपनी औरतों के साथ समान से व्यवहार करेंगे। एक बार किसी पूछने वाले ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा जीवन में सम्मान का सब से अधिक योग्य कौन है? आप ने फमराया तुम्हारी मां। उस ने कहा फिर सि का बाद कौन है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोबारा फरमाया तुम्हारी मां। और तीसरी बार पूछने पर फरमाया तुम्हारी मां कहती हैं इस बात ने मुझे बड़ा प्रभावित किया।

(सहीह अल-बुख़ारी किताबुल अदब हदीस 5971)

इसी तरह तब्लीग़ डिपार्टमेंट की एक मेहमान थी लेनेट गोयलिन कहती हैं इस वर्ष पहली बार पहली बार जलसा सालाना में भाग लेने का अवसर मिला। मेरा विचार है कि ऐसा आदमी जो अल्लाह तआला के बारे में कम ज्ञान रखता है जब सालाना जलसा में शामिल हो जाए तो जलसा के समापन पर इस विषय पर अल्लाह तआला की हस्ती के बारे में ज्ञान का समुंदर लेकर लौटेगा।

जलसा का जो दुनिया में विभिन्न माध्यमों से प्रकाशन हुआ है उसमें मीडिया ने जो किया वह तो है अल-इस्लाम वेबसाइट के माध्यम से भी 862000 हज़ार बार विज़िट किया गया और वीडियोस भी 218000 लोगों ने देखीं। ऑनलाइन और प्रिंट अखबारों में जलसा के बारे में जो खबरें प्रकाशित हुई उन की संख्या 77 बनती है रेडियो पर बीस ख़बरें प्रकाशित हुईं। कुल मिलाकर रिपोर्टस की संख्या 77 बनती है। इन के माध्यम से 26 लाख से अधिक लोगों तक संदेश पहुंचा। मशहूर टीवी रेडियो चैनल जो मीडिया कवरेज देने वाले हैं उन में बी.बी.सी टीवी है, आई टीवी है, बीबीसी अरबी है, दी इकनोमिस्ट पत्रिका, द एक्सप्रेस, इन्डीपेन्डन्ट, हफिंगटन पोस्ट, हेराल्ड, एल बी सी, केपीटल रेडियो, अल्टन हेराल्ड, लंदन लाइव। इसके अलावा, बी बी सी के बास रेडियो स्टेशनों पर इतवार वालेदनि हमारे प्रतिनिधि को समय दिया गया था। इस के माध्यम से बड़ी आबादी कवर की गई। दुनिया भर के पत्रकार आए हुए थे वे भी वापस जाकर अपने अख़बारों में और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचार पत्र और वृत्तचित्र देंगे।

एक जापानी न्यूज़ एजेंसी के पत्रकार कहते हैं कि मैं जलसा सालाना के शांति वाले परिवेश से बहुत प्रभावित था और सबके चेहरों पर खुशी झलकती थी परंतु वैश्विक बैअत के अवसर पर कितनी संख्या में शामिल सिसक सिसक कर रो क्यों रहे थे? इस पर उन्हें बाद में बताया गया कि अहमदी मुसलमान हर एक ख़ुश था लेकिन उस समय रो रहे थे कि अहमदी मुसलमान खुदा तआला की तरफ से दी गई नेमतों का शुक्रिया अदा कर रहे थे और दुनिया में शांति के लिए दुआ कर रहे थे।

एक पत्रकार औरत, औरतों के जलसा के बारे में कहती हैं कि पिछले साल मुझे जलसा में शामिल होने का अवसर मिला था परंतु औरतों वाले भाग में नहीं जा सकी। इस साल मुझे स्त्रियों की तरफ जाने का अवसर मिला मुझे कहना पड़ेगा कि आप की स्त्रियां मर्दों से ज्यादा पढ़ी-लिखी और दिलचस्प हैं वे हर लिहाज़ से आज़ाद थीं और अपनी जमात के साथ बहुत अधिक मुख़लिस थीं मेरे लिए यह बहुत अधिक प्रभावशाली अनुभव था।

इस साल अफ्रीका में जलसा की खबरें कवर हुईं। 15 टीवी चैनलों ने जलसा UK की कार्रवाई प्रसारित की जिनमें गाना नजरिया सेरा लियोन गैंबिया रवांडा बुरकीना फासो बैनिन युगांडा माली कांगो ब्राजील और पहली बार ब्रूंडी टेलीविजन ने प्रसारण किया। पत्रकारों ने अपने अपने चैनल पर न्यूज़ स्टोरीस प्रसारित कीं। सम्पूर्ण रूप में 50 लाख लोगों तक अफ्रीका में लोगों को कार्रवाई दिखाई गई। इस बारे में सैकड़ों प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त हुई है पता लगता है कि लोगों ने देखा है।

बहुत लंबा विस्तार है जो लोगों की प्रतिक्रियाएं भी हैं और प्रैस की भी हैं इसी प्रकार दूसरे विभागों के बारे में जिन्होंने अच्छा प्रभाव छोड़ा है। तस्वीर की प्रदर्शनी, रियूयू के अतिरिक्त आर्काइव अलहकम का प्रदर्शन इत्यादि और इसके कारण से लोगों को जमाअत के इतिहास का ज्ञान हुआ। जलसा का प्रबंध भी और इन प्रदर्शन वगैरह में भी जो काम करने वाले थे स्वंय सेवक ही थे। और जैसा कि प्रतिक्रियाओं से भी प्रकट है कि यह सब काम करने वाले भी एक खामोश तब्लीग़ कर रहे थे बच्चे भी स्त्रियां भी और पुरुष भी इस बार आम तौर पर शामिल होने वाले लजना की तरफ से भी और मर्दों की तरफ से भी काम करने वाले तथा काम करने वालियों के बारे यह बता रहे हैं कि बहुतअ अधिक अच्छे आचरण से व्यवहार किया और सेवा की भावना भी बहुत थी। इस कारण सब शामिल होने वालों को अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के बाद इन सेवा करने ने वालों का भी शुक्र अदा करना चाहिए और उनके लिए दुआ भी करनी चाहिए अल्लाह ताला उनको भविष्य में सेवा की शक्ति प्रदान करें।

मैं सेवाकरने वाले तथा करने वालियों का शुक्रिया अदा करता हूं। अल्लाह ताला उन्हें अच्छा बदला दे और भविष्य में पहले से बढ़कर सेवा करने की तौफीक़ प्रदान करें और हमेशा ही है ख़िलाफत अहमदिया का सहायक बनाए। सब काम करने वाले भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें जो काम करने वाले हैं काम करने वालियां हैं सबसे बढ़कर उनको अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उनको सेवा करने की तौफीक़ प्रदान की अल्लाह तआला के फज़्ल के बिना संभव नहीं था। अल्लाह तआला सब को विनम्रता में बढ़ने की तौफीक प्रदान करे और इस सेवा की वजह से, इस प्रशंसा के कारण किसी प्रकार का अहंकार पैदा ना हो।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِيۡلِ لَاَخَذۡنَا مِنۡهُ بِالۡيَمِيۡنِ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡهُ الۡوَتِيۡنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

गए और केमरों का बहुत अधिक प्रयोग हुआ। जब कि हज़रत मिर्ज़ा महमूद साहिब ब्राऊन अचकन और सफेद पगड़ी पहने हुए हाल में दाख़िल हुए। अमन वाले माहोल में लाल कालीन पर चले। और स्टेज पर पधारे। यहां वह चर्च मिनिस्टर Bertel Haarder 5 और मस्जिद नुसरत जहां Hvidover के इमाम मुहम्मद ज़करिया के मध्य में पधारे।

लगभग 150 मेहमान स्वागत करने के लिए मौजूद थे। रात के खाने से पहले आयोजन का आरंभ क़ुरआन की तिलावत से हुआ जिसमें अन्य बातों के अतिरिक्त सारे कार्यों में इंसाफ से काम लेने की नसीहत थी यद्यपि दुश्मन से भी मामलों का संबंध हो। इसके बाद Bertel Haarder ने तकरीर कि जिसके शुरू में यह बताया कि चर्च मिनिस्टर की हैसियत से उनकी एक धार्मिक जिम्मेदारी यह है कि डेनमार्क में सब धर्मों के मध्य आपस में प्रेम का माहौल पैदा करें। इसके बाद आप ने यह कहा डेनमार्क में हमारे यहां सरकारी तौर पर 160 धार्मिक संस्थाएं हैं जिनमें से प्रत्येक को अपने धर्म पर कायम रहने और अनुकरण करने की सुविधा है इस्लाम अहमदिया जमाअत एक विशेषता रखती है क्योंकि इन के सदस्य इस समाज में बहुत रचे बसे हुए हैं पिछले 50 सालों से जब से आप यहां हैं हम इस शान्ति वाले समाज में मिलजुल कर रहने पर ख़ुश हैं यह मेरे लिए बहुत ख़ुशी की बात है कि आप की जमाअत वास्तविक तौर पर खुले हाथों से इस धर्म को प्रस्तुत करती है जिसका लक्ष्य प्रेम सबके लिए नफरत किसी से नहीं है Bertel Haarder ने कहा कि शायद यह संदेश साधारण सा लगता है परंतु ऐसा नहीं उन्होंने इस पर जोर देते हुए एक यही बात है जिस की इस समय जबकि उग्रपंथी के बहुत खतरे हैं बहुत ज़रूरत है विशेष रूप से इस वजह से कि बहुत से ऐसे हमले उन लोगों की तरफ से इस्लाम के नाम पर किए जाते हैं इसलिए इस बात की बहुत जरूरत है कि यह इस्लाम की ही एक शाख है जो इस्लाम का प्रतिनिधि बिल्कुल अन्य रूप में पेश करती है। चर्च मिनस्टर की इस तकरीर के बाद विशेष वक्ता हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब ने श्रोताओं से इस्लाम के बारे में ग़लतफहमी के बारे में संबोधन करते हुए फरमाया

इस्लाम समस्त इंसानों को हर प्रकार की नफरत दुश्मनी और बुराई को दूर करने की नसीहत करता है इसी प्रकार आप ने मुहब्बत और आपसी भाईचारे तथा सम्मान के झंडे तले जमा होने की नसीहत की। आपने तीसरे विश्वयुद्ध के बारे में अपने विचारों का इजहार करते हुए फरमाया मतभेद सारी दुनिया में आग लगाने के काम को जारी रखे हुए हैं और हमें किसी शक में नहीं पड़ना चाहिए कि एक ख़तरनाक जंग के साए हमारे सामने लहरा रहे हैं विभिन्न ब्लॉक्स और गठबंधन हमारे सामने बन रहे हैं, मुझे इस बात का भय है कि हम वास्तविक सूरत-ए-हाल स्पष्ट किए बिना एक ख़तरनाक तीसरे विश्वयुद्ध की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का यह कहना ग़लत नहीं होगा कि इस जंग के चिन्ह प्रकट हो चुके हैं उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया और एक दूसरे का सम्मान करने से हम अपनी आने वाली नस्लों को सुरक्षित बना सकते हैं।

हिजरत करने वालों की वर्तमान अवस्था और यूरोप महाद्वीप में आने वाले हिजरत करने वालों का वर्णन भी मध्य में आया। ख़लीफा ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि कोई भी मिलियंस की संख्या में मुहाजिरों को समोने की ताकत नहीं रखता आप ने फरमाया कि इस का केवल एक ही वास्तविक हल है कि असल देशों में शांति स्थापित करने के लिए कोई तरीका धारण किया जाए। और इस बात की कोशिश की जाएगी कि उनके देशों में अत्याचार को रोका जाए। उन्होंने राजनीतिक दलों और सियासी लीडरों को इस बारे में ध्यान दिलाया कि वे अमन स्थापित करने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देंगे। ख़लीफा और 150 मेहमानों ने रात के खाने से पहले हाल में दुआ की इसके बाद हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब जमाअत का तरफ से उसी इज्ज़त तथा सम्मान के साथ हाल से विदा हुए जिस तरह में पधारे थे।

12 मई 2016 ई (दिनांक जुमेरात)

सुबह 4:10 पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में पधार कर नमाज़ फज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास पर पधारे।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक रिपोर्टें, और पत्र देखे और पत्रों और रिपोर्टों पर अपने मुबारक हाथ से हिदायतें दीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ दफ्तरके काम में व्यस्त रहे।

2:00 बजे मस्जिद में नमाज ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने का बाद हुज़ूर अपने निवास में पधारे।

शाम के समय भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ दफ्तर में काम करने में व्यस्त रहे।

प्रोग्राम के अनुसार 7:00 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर पधारे। और फैमलीज़ की मुलाकातें आरंभ हुईं।

आज शाम के सेक्शन में 23 परिवारों के 76 व्यक्तियों ने अपने प्यारे आका से मुलाकात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को कलम दिए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट दीं। प्रत्येक फैमिली ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य भी पाया।

आज मुलाकात करने वाली यह फैमिली माल्मो के स्थानीय लोगों के अतिरिक्त गोटन बर्ग आर लोलियू से आई थीं। गोटन बर्ग से आने वाली फैमिली 285 किलोमीटर लोलियू से आने वाली फैमली 1510 किलोमीटर की दूरी तय करके मुलाकात के लिए पहुंची। मुलाकातों का यह प्रोग्राम 8:50 तक जारी रहा इसके बाद 9:15 पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महमूद में पधार का नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे।

माल्मो शहर में जमाअत अहमदिया की स्थापना 1970 ई के दशक में हुई जब कुछ अहमदी लोग यहां आकर ठहरे। 1984 ई में जमाअत ने यहां के क्षेत्र Klogerupes में जमाअत के केन्द्र के लिए एक ग्यारह सौ क्षेत्रफल पर आधारित एक दो मंज़िल इमारत ख़रीदी। और इस का नाम बैयतुल हमद रखा।

इस इमारत के हाल को पुरुषों के लिए और एक हाल को औरतों के लिए मस्जिद की शक्ल दी गई इसके अतिरिक्त इस में रहने का स्थान भी था।

अब अल्लाह तआला ने अपने फज़्ल तथा करम से स्वीडन को माल्मो में एक बड़ी तथा खुली दो मंज़िल वाली मस्जिद महमूद और साथ ही एक बहुत बड़ा कंपलेक्स बनाने की तौफीक प्रदान की।

माल्मो के एक सदस्य ने 5000 मीटर का एक ज़मीन का टुकड़ा खरीद कर जमाअत का पेश किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने 12 सितंबर 2005 ई को अपने स्वीडन के दौरा के दौरान माल्मो से गोटनबर्ग रवाना होने से पहले इस ज़मीन को देखा।

इस मस्जिद को बनाने का काम 2013 ई में शुरू हुआ मस्जिद का यह टुकड़ा ज़मीन एक टीले पर मेन हाईवे के नज़दीक एक स्पष्ट स्थान पर है। यह हाईवे E 22, E6 नॉर्वे और स्वीडन को पूरे यूरोप से मिलाती है और इस तरह स्वीडन और नॉर्वे के सारे बड़े शहरों को भी मिलाती है इस हाईवे पर सफर करते हुए दूर से भी मस्जिद की आलीशान इमारत नज़र आती है इस पर रोजाना कई हज़ार गाड़ियां गुज़रती हैं और हर गुज़रने वाला इस मैसेज को देखता है।

इस परिसर का कुल निर्माण क्षेत्र 2353 वर्ग मीटर है, जिसमें पांच भवन शामिल हैं। मस्जिद महमूद का क्षेत्र 14 9 4 वर्ग मीटर है। खेल, बहु-उद्देश्यीय हॉल का क्षेत्र 750 वर्ग मीटर है। मुरब्बी हाउस का क्षेत्र 110 वर्ग मीटर है। ऊर्जा कक्ष 70 वर्ग मीटर है। इस के अतिरिक्त एक गेस्ट हाउस भी है। विभिन्न कार्यालय हैं। दो दफ्तर एम.टी.ए के हैं। तीन कार्यालय लजना इमाउल्लाह के लिए हैं और मस्जिद से सटे तीन कार्यालय जमाअत के पदाधिकारियों के लिए हैं। एक कार्यालय मेन गेट के पास है प्रदर्शनी, पुस्तकालय हॉल भी मौजूद है।

मस्जिद के तल पर औरतों के लिए और दूसरी मंजिल पर पुरुषों के लिए एक हॉल है। हर हाल में पांच पांच सौ लोग हाल में, नमाज़ अदा कर सकते हैं। स्पोर्ट्स हॉल में 700 आदमी नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस तरह, कम से कम 1700 लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफ़कत करते हुए इस मस्जिद का नाम मस्जिद महमूद रखा।

स्वीडन की भूमि पर जमाअथ अहमदिया की यह दूसरी मस्जिद है। पहली मस्जिद, मस्जिद नासिर गोटन बर्ग शहर में 1976 ई में निर्माण हुई थी और अब लगभग 40 साल बाद यहां दूसरी मस्जिद माल्मो शहर में निर्माण हुई है।

इस के अतिरिक्त देश की राजधानी स्टॉकहोम में जमाअत का सेन्टर बैयतुल आफियत है अब इस साल जमाअत ने लोलियू में अपना केंद्र स्थापित किया है। स्वीडन में भी अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया स्वीडन भी तरक्की के नए युग में प्रवेश कर रही है।

मस्जिद महमूद के उद्घाटन के विषय में मीडिया कवरेज

स्वीडन के इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में "मस्जिद महमूद" के उद्घाटन कार्यक्रम के संदर्भ में कवरेज हुई है।

*आज स्वीडिश टेलीविजन "स्कैन टीवी" ने "नई मस्जिद में पवित्र दर्शन" के शीर्षक के साथ खबर देते हुए बताया इन दिनों माल्मो में नई मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है। इस परियोजना के निर्माण की पूरी राशि अहमदिया समुदाय ने दी है, जो सभी प्रकार के अतिवाद की निंदा करती है। हमारा माटो "मुहब्बत सब से नफरत किसी से नहीं " यह मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का कहना है जो जमाअत अहमदिया के सबसे बड़े नेता हैं और इन दिनों माल्मो में मस्जिद के उद्घाटन के लिए आए हुए हैं।

कई लोगों ने मस्जिद के दृश्य को देखा है जब वे पास की सड़क, मोटरवे से गुजरते हैं इस मस्जिद का नाम "मस्जिद महमूद" रखा गया है जिसका नाम जमाअत के दूसरे ख़लीफा के नाम पर रखा गया है। बुध के दिन, मीडिया के लिए मस्जिद के दरवाजे खोलें। वसीम अहमद साजिद साहिब जो लोलियू शहर से यहां आए हैं ने कहा कि यहां आना एक बहुत बड़ी बात है और मेरे लिए सम्मान की बात है।

एक स्वीडिश लड़की फरीदा निल्सन यहां अपने आध्यात्मिक नेता को मिलने के लिए लोलियू से आई हैं। उन्होंने कहा कि आज यहां आने का उद्देश्य हुज़ूर अनवर से मिलना है। यह मेरे लिए बहुत ख़ुशी की बात है। यद्यपि मैं लंदन में पहली बार उनसे मुलाकात कर चुकी हूं।

जमाअत माल्मो की कुल संख्या 300 है, जबकि स्वीडन में में एक हज़ार है और दुनिया भर में कई मिलियन हैं। जमाअत अहमिदया एक सुन्नी संप्रदाय है जिस की स्थापना पंजाब में रखी गई थी। यह संप्रदायों के निकट यह संप्रदाय विवादस्पद है क्योंकि इनका नबुव्वत के बारे में विश्वास और व्याख्या अलग है। कई लोग जमाअत का विरोध करते हैं। उन्हें पाकिस्तान में अपने आप को मुसलमान कहलाए जाने की आज्ञा नहीं है। यह मस्जिद इस देश की दूसरी सबसे बड़ी मस्जिद है।

ख़लीफतुल मसीह मिर्ज़ा मस्रूर अहमद साहिब का कहना है कि यह इमारत बहुत सुन्दर है और मुझे आशा है कि यहां के निवासियों को यह बहुत पसंद आएगी।

मिर्ज़ा मसूरूर अहमद जमाअत अहमिदया के सबसे बड़े आध्यात्मिक नेता है। जमाअत अहमदिया का मिशन प्रेम और शांति की स्थापना है, और यह जमाअत सभी प्रकार के आतंकवाद से दूर रहती है। इस मस्जिद में सभी लोगों का स्वागत होगा। इस मस्जिद के दरवाजे हर किसी के लिए खुले हैं। अज़ाना की आवाज़ स्पीकर के माध्यम से मस्जिद के अंदर ही गूंजती है। यहां एक स्पोर्ट्स हॉल और मुलाकात के लिए कमरें भी मौजूद हैं। मस्जिद का सारा खर्च जमाअत अहमदिया ने ख़ुद सहन किया है

*** ऑनलाइन समाचार पत्र 24-मालमो (Arvid Nikka) ने निम्नलिखित ख़बर लगाई।**

" मुसलमान पोप " मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं "बड़ा व्यक्तित्व" अखबार ने लिखा:

निर्माण की अनुमति के सोलह साल बाद अब माल्मो के क्षेत्र Elisedal में स्थित नई "मस्जिद महमूद" का उद्घाटन हो रहा है। शुक्रवार के दिन तारीख़ी कार्यक्रम में जमाअत अहमदिया के विश्वव्यापि नेता ने ख़ुद भाग लिया है। 65 वर्षीय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के शीर्ष बड़े लीडर और आध्यात्मिक प्रमुख हैं। जमाअत अहमिदया इस्लाम का एक संप्रदाय है जिसमें लाखों सदस्य हैं। पहले आप यूरोपीय संसद ब्रिटिश संसद और अमेरिकी कांग्रेस के कई सदस्यों को भी संबोधित किया है। अब आप माल्मो पधारे हैं। आपका आगमन मस्जिद महमूद के ऐतिहासिक उद्घाटन के अवसर पर है।

ख़लीफतुल मसीह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं, और यह यात्रा एक बड़े सम्मान का कारण है। चूंकि आप 2003 ई में ख़लीफा बने हैं, इसलिए आपने पूरी दुनिया में यात्रा कर के शांति और सहिष्णुता का प्रचार किया है। यह बात स्टॉकहोम में जमाअत अहमदिया के इमाम काशिफ विर्क ने कही।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने हर जगह चरम पंथ के ख़िलाफ आवाज़ उठाई है, उन्होंने कहा कि पुलिस को अतिवाद की सुरक्षा के लिए अधिक शक्तियां देनी चाहिए।

अमेरिकन समाचार पत्र "वॉल स्ट्रीट जर्नल" ने आप का नाम "मुस्लिम पोप" रखा इस कारण से जो आप को सम्मान जमाअत अहमदिया में प्राप्त है। जमाअत अहमदिया स्वीडन के लिए, जिन के एक हज़ार से अधिक लोग स्वीडन में रहते हैं, यह नई मस्जिद एक बड़ी सफलता है। इस का खर्च जमाअत को लोगों ने ख़ुद सहन किया है। और इसकी तैयारी 2000 ई से शुरू है। रास्ते में कई बाधाएं आईं।

*** समाचार पत्र sydsvenskan ने मस्जिद के उद्घाटन के संबंध में निम्नलिखित शीर्षक के साथ रिपोर्ट प्रकाशित की।**

नई निर्माण को देखने के लिए ख़लीफा माल्मो में पहुंचे

जमाअत अहमदिया की नई मस्जिद का उद्घाटन शनिवार को किया जा रहा है। उनके निर्माण का निरीक्षण, ख़लीफा, मसरूर अहमद साहिब ने किया। 24 मीटर ऊंची इमारत की कुल लागत 49 मिलियन करोंज़ हैं। यह सारा खर्च स्वीडन की जमाअत के लोगों ने सहन किया। इसका उद्घाटन शनिवार को किया जाएगा। मंगलवार को जमाअत के सबसे बड़े नेता मिर्ज़ा मसूर अहमद माल्मो आए थे।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने कहा कि जब मैं यहां पहली बार आया था, तो वहां एक खुला क्षेत्र था। कल जब मैं आया था वहां एक सुन्दर इमारत थी। यह धार्मिक, व्यक्ति के लिए यह दृश्य बहुत भावनात्मक है जब उसे इस प्रकार का स्थान देखने का अवसर मिले जहां लोग इबादत के लिए इकट्ठे होते हैं।

जमाअत अहमदिया ख़ुद को एक शांतिपूर्ण धर्म के रूप में प्रस्तुत करती है। लेकिन उस के महिलाओं और समलैंगिकों के बारे में राय दूसरों से अलग हैं। ख़लीफा के साथ एक लंबा इन्टरवियू शुक्रवार को प्रकाशित किया जाएगा।

मुबल्लिग़ इन्चार्ज सेंटर ने बताया कि मेरे पास दफ्तर में एक बच्ची जिसकी आयु 16 या 17 वर्ष थी आई और भावनात्मक होकर रोने लगी और विनीत के सामने सोने के कुछ ज़ेवर रखे और कहा इमाम साहब मुझे पता है कि मेरे अब्बा माल्मो में मस्जिद के लिए कुर्बानी करने की बहुत इच्छा रखते हैं परंतु उनके पास पैसे नहीं है यह कहते हुए बच्ची रोने लग गई और कहने लगी मेरे पास यह कुछ ज़ेवर हैं जो आप हमारे सारे घर की तरफ से स्वीकार कर लें आज ये लोग अपनी कुर्बानियों का फल एक बहुत सुंदर मस्जिद के रूप में देख रहे थे और इस बात पर उनके दिल ख़ुदा के सामने शुक्र से भरे थे कि उनकी कुर्बानियां ख़ुदा तआला के समक्ष स्वीकार हुईं।

आज इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर स्वीडन के दूसरे लोगों के अतिरिक्त बाहर की जमाअतों से भी लोग बड़ी संख्या में अपने प्यारे आका के अनुसरण में जुम्मा की नमाज पढ़ने के लिए आए थे। डेनमार्क, फिनलैंड, UK, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, हालैंड औ़ नार्वे से एक बड़ी संख्या में जमाअत के लोग और फैमिलीज़ स्वीडन पहुंची थीं।

आज इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर जुम्मे की नमाज में शामिल होने वालों की संख्या 1500 थी जिसमें से 800 से अधिक लोग बाहर की जमाअत से और दूसरे देशों से आए थे। नार्वे से आने वाले लोगों में से एक साहिब कहने लगे ऐसा लगता है कि आज हमारी सारी जमाअत आ गई है

आज पहला अवसर था के माल्मो से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा एम टी ए के माध्यम से दुनिया भर में सीधा प्रसारित किया जा रहा था। प्रोग्राम के अनुसार 2:00 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास से बाहर पदारे और मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती का उद्घाटन किया और दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अंदर पधारे और खुत्बा जुम्मा दिया।(नोट जुम्अ: का यह खुत्बा बदर हिंदी में प्रकाशित हो चुका है।)

यह खुत्बा 3:00 बजे तक जारी रहा इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने नमाज़ जुम्मा के साथ नमाज़ असर जमा करके पढ़ाई नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर पधारे।

Kaal कॉल मार से Roger Kaliff जो कालमार काउंसिल के चेयरमैन है और पूर्वी यूनियन में कई कमेटियों के मेंबर रह चुके हैं लगभग 305 किलोमीटर का सफर तय करके मस्जिद के उद्घाटन में शामिल हुए और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात के लिए आए हुए थे।

महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। यह मुलाकात लगभग 15 मिनट तक जारी रही। इसके बाद महोदय इतना ही सफर करके वापस कॉल मार गए।

ऑनलाइन अखबार माल्मो 24 का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह से इंटरव्यू

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार ऑनलाइन अखबार 20 माल्मो के पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इंटरव्यू लिया। पत्रकार ने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को स्वीडन में स्वागत किया। और इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से पूछा कि आप का अभी तक माल्मो का विज़िट कैसा रहा इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया पिछले 3

दिनों से मैं बहुत प्रसन्न हूं। यह बहुत सुंदर स्थान है। खुला क्षेत्र है। मैं ताज़ा हवा से आनंदित हो रहा हूं यहां अपनी जमाअत के लोगों से मिल रहा हूं वे सब बहुत प्रसन्न है मैं भी प्रसन्न हूं।

इस पर पत्रकार ने पूछा कि क्या माल्मो मैं आप का यह पहला विज़िट है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया नहीं मैं यहां पहले भी आया था। मेरा विचार है शायद 2005 ई में यहां आया था। उस समय हम ने सेकंड न्यून देशों का जलसा यहां गोथनबर्ग में आयोजित किया था।

पत्रकार ने कहा आज का दिन आपके लिए बहुत बड़ा दिन था। आपको कैसा लगा?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया बहुत अच्छा दिन रहा। मुझे स्वीडन के अतिरिक्त दूसरे देशों से मेहमानों के आने की आशा नहीं थी। यहां जुम्मे की नमाज़ पर स्थानीय अहमदियों की तुलना में बाहर से आए अहमदियों की संख्या अधिक थी।

इसके बाद पत्रकार ने कहा कि यहां आप की काफी बड़ी मस्जिद बन गई है और माल्मो में जमाअत के लोगों की संख्या इस तुलना में बहुत बड़ी है तो आप इस सुंदर मस्जिद को कैसे भरेंगे।?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुस्कुराते हुए फरमाया अगर आप जैसे खुले दिल के लोग हमारे साथ शामिल होंगे तो हमारी संख्या में अपने आप ही वृद्धि हो जाएगी।

पत्रकार ने अगला सवाल किया कि आपके विचार में आप की जमाअत के लिए इस मस्जिद के बनाने का इतना महत्त्व क्यों है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मैंने अपने ख़ुत्बा में इस संदर्भ से बात की थी कि केवल माल्मो में नहीं बल्कि जहां कहीं भी हमारी जमाअत हो हमारे पास संसाधन हो वहां की स्थानीय जमाअत मस्जिद बनाने की इच्छा रखती हो और स्थानीय लोग इसके लिए कुर्बानी भी करें तो हम ऐसी जगह पर ज़रूर मस्जिद बनाते हैं अब अगर लोलियू की जमाअत मस्जिद बनाना चाहे तो हम वहां पर जाएंगे और अगर कहीं और मस्जिद बनानी हो तो हम वहां पर जाएंगे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हम धार्मिक जमाअत हैं हम वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण करने की पूरी कोशिश करते हैं और हमारी आस्थाओं के अनुसार मानव जाति का सबसे प्रथम और आधारभूत उद्देश्य अपने सृष्टा की इबादत करना है जब आपने एक जगह जमा होकर इबादत करनी हो तो एक जगह की भी आवश्यकता होगी चाहे वह छोटी सी मस्जिद हो या बड़ी मस्जिद जहां कहीं भी हमारी जमाअत है वहां हम मस्जिद बनाने की कोशिश करते हैं। जर्मनी में हमारी दर्जनों मस्जिदें हैं और हम और मस्जिद बना रहे हैं।

इसके बाद पत्रकार ने पूछा कि जमाअत अहमदिया और अन्य मुसलमानों के मध्य अंतर क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया यह बहुत साधारण प्रश्न है जो हर एक पूछता है। इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी के अंतिम समय में मुसलमान इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को भुला देंगे और उस समय मसीह मौईद तथा महदी का प्रादुर्भाव होगा जो अल्लाह तआला की तरफ से हिदायत प्राप्त करने वाला होगा और हमारा ईमान है कि वह व्यक्ति प्रकट हो चुका है और हमारा ईमान है कि जो मसीह मौऊद तथा मेहदी होगा वह नबी होगा और उसको नबी के संबोधन से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नवाज़ा है यह बुनियादी अंतर है जो जमाअत अहमदिया और अन्य संप्रदायों के मध्य अन्तर का कारण है ग़ैर अहमदी मुसलमानों का कहना है कि एक ऐसे आदमी को भी आना है और उनका कहना है कि जिस मसीह ने आना है वह आसमान पर जीवित है परंतु हम कहते हैं कि मसीह खुदा तआला के नबी थे जो इस दुनिया में 120 वर्ष जिंदा रहे और इसके बाद उन की मृत्यु हुई और आसमान पर कोई भी व्यक्ति 2000 वर्ष तक जीवित नहीं रह सकता। हमारा यही विश्वास है कि मसीह अलैहिस्सालम एक मुत्तकी इंसान थे और अल्लाह तआला के पैगंबर थे जिन्होंने खुदा तआला की तरफ से दिए गए मिशन को संपूर्ण किया जबकि अन्य मुसलमान कहते हैं कि मसीह अलैहिस्सालम आसमान पर जीवित हैं और किसी समय नाज़िल होंगे और ईसाइयों की भी यही आस्था है हमारा विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और पवित्र कुरआन की तरफ से मसीह के आने के बारे में बताए गए चिन्ह पूरे हो चुके हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई के अंतिम ज़माना में यातायात के माध्यम बहुत अधिक हो जाएंगे जैसा कि हम देखते हैं आजकल के ज़माना में कोई भी सफर के लिए ऊंट या घोड़ों का प्रयोग नहीं करता बल्कि तेज रफ्तार ट्रेनों बसों, कारों, समुद्री और हवाई जहाजों ने इनका स्थान ले लिया है फिर कुछ आसमानी चिन्ह भी हैं जैसे रमज़ान के महीने में निर्दिष्ट दिनों में चांद और सूरज को ग्रहण लगेगा और यह चिन्ह भी लगभग 100 वर्ष पहले पूरे हो चुके हैं और उस समय दावा करने वाला भी मौजूद था अत: समस्त चिन्ह पूरे हो चुके हैं और हमारा विश्वास है कि वह आदमी प्रकट हो चुका है वह अल्लाह का नबी है और यही चीज़ हमारे और दूसरे मुसलमानों के मध्य झगड़े का कारण है।

पत्रकार ने पूछा कि क्या आप की कुरआन ए करीम की व्याख्या दूसरे मुसलमानों की व्याख्या से अलग है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया सारा कुरआन तो नहीं परंतु कुछ आयतों की व्याख्या भिन्न भिन्न है परंतु हम कहते हैं कि बौद्धिक दलील दिए बिना क़ुरआन करीम की किसी भी आयत की व्याख्या नहीं की जा सकती अगर हम कुरआन की किसी आयत की व्याख्या करते हैं तो उसके पीछे तर्क एवं परमाणु होते हैं उदाहरण के तौर पर हम दूसरे मुसलमानों को कहते हैं कि कुरान ए करीम में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को निस्संदेह आख़री नबी करार दिया गया है इसलिए कोई दूसरा नबी नहीं आ सकता परंतु हम कहते हैं कि कुरआन ए करीम में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबियों की मोहर करार दिया गया है अर्थात नबी तो आ सकते हैं मगर उन पर नबी करीम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहर होनी आवश्यक है कोई नई शरीयत या नई किताब अवतरित नहीं होगी परंतु मुसलमानों के बीच में अगर खुदा तआला चाहेगा तो वह किसी को भी भेज सकता है हम खुदा ताला के गुणों को सीमित तो नहीं कर सकते। अत: इस तरह की बात निर्दिष्ट आयते हैं जिनकी व्याख्या में अंतर पाया जाता है वरना हम भी यही मानते हैं कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन हैं वह ख़ातम का अर्थ यह लेते हैं लेते हैं कि अब इस के बाद कोई नबी नहीं आ सकता परंतु हम कहते हैं कि ख़ात्म के अर्थ मुहर के हैं और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मोहर के साथ भी आ सकता है।

अगला प्रश्न किया कि आप किस तरह ख़लीफा बने थे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मुझे चुनने वाली मजलिस के द्वारा ख़लीफा चुना गया था

इस पर पत्रकार ने कहा कि आप इस बारे में कुछ और बता सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया एक ख़लीफा के देहान्त के बाद चुनने वाली मज्लिस के मेंबर दुनिया भर से एक जगह जमा होते हैं और वह अपना वोट देते हैं बिल्कुल उसी तरह जैसे पोप का बंद कमरे में चयन होता है जब वहां वोटिंग हो रही होती है तो हर एक को वोट देने का अधिकार होता है। ख़िलाफत के लिए नाम प्रस्तुत होते हैं और जिसके सबसे ज्यादा वोट होते हैं ख़लीफा चुना जाता है परंतु आप ख़ुद ख़िलाफत के लिए अपना नाम प्रस्तुत नहीं कर सकते एक आदमी नाम प्रस्तुत करता है और दूसरा आदमी उसका समर्थन करता है किसी प्रकार की बहस या मुबाहसा नहीं होता कोई लड़ाई भी नहीं कर सकता। कोई भी यह राय भी नहीं दे सकता कि आप अमुक को वोट दें या उस का न दें। इस तरह यह चयन बहुत साफ सीधा होता है और जिस को सबसे अधिक वोट मिले ख़लीफा चुना जाता है।

पत्रकार ने सवाल किया कि जब से आप ख़लीफा चुने गए हैं आप ने दुनिया के विभिन्न देशों के सफर किए हैं इन सफरों का क्या उद्देश्य है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मैं अपनी जमाअत के लोगों से मिलने के लिए जाता हूं और विभिन्न देशों के दौरे करता हूं मगर मेरे देशों का उद्देश्य राजनीतिक नेताओ से मिलना नहीं होता परंतु इन दौरों के मध्य यदि कोई राजनेता मिलने के लिए आ जाए अगर स्थानीय जमाअत के लोकल प्रबंध करने वाले के साथ अच्छे संबंध हैं और संपर्क हो और वह कुछ समय प्रोग्रामों में राजनेता और अन्य लोगों की मुलाकात में रख ले तो मैं उन से भी मिल लेता हूं।

पत्रकार ने सवाल किया कि आप के ख़िलाफत के समय में उग्रपन्थ बहुत बढ़ गया है इस बारे में आप अपनी ख़िलाफत का पिछले ख़लीफाओं के ज़माने के साथ किस तरह तुलना करते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया सारे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 13 September 2018 Issue No. 37

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पिछले ख़लीफाओं ने भी यही काम किए हैं हमें "मुहब्बत सबके लिए नफरत किसी से नहीं" का जो नारा दिया गया वह तीसरे ख़लीफा ने दिया था। कई बार दुनिया की विशेष अवस्थाओं को देख कर कुछ चीज़ों पर ज़ोर हो जाता है आजकल दुनिया की शांति की अवस्था के कारण मैं इस बात पर ध्यान दे रहा हूं वरना अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक जिन्हें हम मसीह मौऊद तथा महदी समझते हैं वे दो उद्देश्य लेकर आए थे एक मानव जाति को उसके श्रेष्ठा के साथ मिलाना और दूसरा अपने ज़िम्मा दूसरों के अधिकारों को अदा करने का एहसास दिलाना और समाज में अमन, प्यार और भाईचारा पैदा करना है। अत: आप अलैहिस्सालम के आने की यही दो उद्देश्य थे और आपके सभी ख़लीफा भी इसी मिशन को लेकर आगे चल रहे हैं यदि अवस्थाएं तब्दील हो जाती हैं और मामूल के अनुसार आ जाते हैं तो मैं दूसरी समस्याओं पर ध्यान दूंगा वैसे भी मैं इस केवल इस बात को तो नहीं वर्णन करता और भी अन्य कई समस्याएं हैं जिन्हें मैं देखता हूं।

पत्रकार ने सवाल किया कि क्या आपके विचार में हालात सुधार पर आ जाएंगे?

इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर लोगों को एहसास ना हुआ तो फिर तीसरा विश्व युद्ध होगा और जब तीसरा विश्व युद्ध हो जाएगा तो तब दुनिया के लीडर और साधारण लोगों को अक्ल आएगी।

पत्रकार ने कहा मुझे नहीं पता कि आप को माल्मो के हालात किस हद तक परिचय है मगर यहां अभी अफवाह फैली हुई है कि माल्मो में आई.एस.आई के लोग पब्लिक में खुलेआम घूमते रहे हैं और नौजवानों को अपने लिए भर्ती कर रहे हैं।

इस पर हुज़ूर ने फरमाया यह तो हकूमत और प्रबंधकों का कर्तव्य है कि वह सावधान और चौकन्ने रहे और देखें यहां क्या हो रहा है और इस को दूर करें।

पत्रकार ने कहा क्या जमअात अहमदिया भी इस बारे में कुछ कर सकती है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि जहां तक जमाअत अहमदिया का सम्बन्ध है हमें न तो Radicalised किया जा सकता है और ना ही उग्र पन्थी हमारे लोगों को अपने लोगों में भर्ती कर सकते हैं हम तो शांतिप्रिय जमाअत हैं और जहां तक दूसरे गिरोहों का संबंध है उनके बारे में मैं नहीं जानता मैंने ख़ुद ही यह बात आप से सुनी है। अगर आपको कुछ माध्यमों से पता चला है तो आपको चाहिए राजनेताओं को बताएं।

पत्रकार ने कहा कि मैंने एक आर्टिकल पढ़ा था जिसके अनुसार आप पुलिस को अधिक आधुनिक करने के पक्ष में हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया लंदन में कानून का पालन करने के लिए पुलिस के पास छोटे छोटे डंडे होते हैं और उनके साथ क्या कर सकते हैं और दूसरे लोग जो शहर या कस्बे की शांति नष्ट करना चाहते हैं उनके पास आधुनिक हथियार होते हैं और पुलिस उन के साथ लड़ना चाहे तो पुलिस क्या करेंगी ज़रूरी है कि पुलिस के पास भी उसी तरह के हथियार हों।

पत्रकार ने प्रश्न किया के यूरोप की नौजवान नस्ल यूरोप को छोड़कर आई एस आई में शामिल हो रही है आपके नज़दीक इसका क्या कारण है?

इस पर हुज़ूर ने फरमाया 2008 में आने वाले आर्थिक संकट के कारण लाखों लोग अपनी नौकरियों से वंचित हो गए थे। अगर उन्हें समय पर नौकरियां दी जाएं जो उनके योग्य और स्तर के अनुसार हों बेशक बहुत ज्यादा लाभदायक ना हो तो कम से कम उनकी पसंद के अनुसार हो तो इससे आप नि:संदेह उन लोगों की संख्या में अच्छी खासी कमी ला सकते हैं जो आर्थिक कारणों के आधार पर Radiacalised हो रहे हैं

पत्रकार ने सवाल किया के यूरोप में रिफ्यूजी करा इसके बारे में आपका क्या विचार है।?

इस पर हुज़ूर ने फरमाया इन पनाह लेने वालों की संख्या लाखों में पहुंच गई है और आपका एक भी देश ऐसा नहीं जो इन सब को पनाह दे सके। इसका बेहतरीन उपाय यही है कि जो देश इन समस्याओं का शिकार हैं उनके पड़ोसी देशों की आर्थिक सहायता की जाए और वहां उन लोगों के कैंप बनाए जाएं। जब अफ़ग़ानिस्तान के रिफ्यूजी अफग़ानिस्तान से बाहर आए थे उस समय दूसरे देशों में भी गए थे मगर उनके एक बड़ी संख्या पाकिस्तान आ गई थी उस समय वहां उनके लिए कैंम्प बनाए गए थे जब हालात सामान्य हो गए तो इन हिजरत करने वालों को वापस अफग़ानिस्तान भिजवा दिया गया इन हिजरत करने वालों की ख़ुराक रहने और अन्य सुविधाओं को पूरी करने के बारे में उस समय की बड़ी ताकतें और धनवान देश पाकिस्तान हकूमत की सहायता कर रहे थे और जब अवस्था सुधार पर आ गई तो यह कैंप खत्म कर दिए थे और हिजरत करने वालों को वापस भिजवा दिया गया और इस वक्त भी यही बेहतरीन हल है वरना आपको तो नहीं पता कि हिजरत करने वाला में से कौन क्या है आई,एस,आई का बयान है कि हर 40 में से एक आई एस आई का मेंबर है तो आप इन को कैसे रखेंगे और यह बयान रिकॉर्ड में आ चुका है

पत्रकार ने प्रश्न किया आपके विचार में स्वीडन के ने रिफ्यूजी के लिए जो अपने दरवाज़े खोले हैं उन्होंने अपनी सादगी के कारण से किया है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा स्वीडन में कितने रिफ्यूजी लेने की हामी भरी है।?

इस प्रकार पत्रकार ने बताया कि आरंभ में 10000 लेने की हामी भरी थी पर अब 160000 के लगभग रिफ्यूजी ले रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया उन लोगों को कहां रखा जाएगा क्या उन लोगों को कैंपों में रखा जा रहा है? कहीं ना कहीं तो उन्हें रखना है इसलिए मेरे नजदीक उपाय यही है कि उन लोगों को पड़ोसी देशों में कैंप बना कर रखा जाए। हां अगर आप समझते हैं कि इन रिफ्यूजीज़ के कारण आपके देश को लाभ होगा तो ठीक है आप उन्हें अपने देश में रख लें अगर इन रिफ्यूजीज़ को देश के अंदर रखने की पॉलिसी है तो फिर हकूमत को सावधान तथा चौकन्ना रहना पड़ेगा और इस बात का विश्वास करना होगा कि ये लोग वास्तव में हिजरत करने वाले हैं।

इसके बाद पत्रकार ने सवाल किया कि आपने अभी बताया कि खलीफा POP की तरह चुना जाता है तो क्या जिस तरह कैथोलिक चर्च बर्थ कंट्रोल और समलैंगिकों इत्यादि के बारे में अपने अंदर नवीन बातों के लिहाज से सुधार कर रहा है, क्या आप भी ख़लीफा होने के कारण इस तरह ही सोच सकते हैं?

इस पर ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मैंने तो सिर्फ इस्लामी शिक्षाओं का अनुकरण करना है। हमारा ईमान है कि कुरआन ए करीम आख़री किताब है और इसमें घरेलू मामलों से लेकर विश्वव्यापी स्तर तक प्रत्येक पक्ष के बारे में मार्गदर्शन कर दिया गया है इसलिए हमें किसी चीज़ को बदलने की आवश्यकता नहीं है। और जहां तक पोप का प्रश्न है तो मेरे विचार में इस ने कभी यह नहीं कहा कि वो सेक्सुअलिटी उचित है क्योंकि बाइबल में स्पष्ट तौर पर लिखा है समलैंगिकता नाजायज कर्म है और बाइबिल में लूत अलैहिस्सलाम की कौम के बारे में विस्तार से लिखा हुआ है कि वह अपने बुरे कर्मों के कारण किस तरह तबाह किए गए थे तो मेरे लिए कुछ लोगों की समस्या है इसको प्रसिद्धी की क्या ज़रूरत है इसके लिए कानून बनाने की क्या आवश्यकता है जहां तक बर्थ कंट्रोल का संबंध है इस्लाम ज़रूरत के समय इसकी आज्ञा देता है इस्लाम औरतों को उनके अधिकार देता है उन्हें विरासत के अधिकार देता है खुलअ का अधिकार देता है और इस तरह औरतों के अधिकार हैं हमारे धर्म में तो पहले से ही नवीनता है इसमें और नवीनता पैदा करने की क्या आवश्यकता है।

पत्रकार ने कहा क्या आप अपने आप को फेमिनिस्ट कहते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ फरमाया हम तो प्रत्येक के अधिकार अदा करते हैं चाहे वह पुरुष है या स्त्री, बूढ़ा हो या जवान औरत और पुरुषों के हक अधिकार देते है हम न तो फेमिनिस्ट हैं और ना ही औरतों के अधिकार मारने वाले हैं। अन्त में पत्रकार ने हज़ूर का शुक्रिया अदा किया और ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ की सेवा में निवेदन किया कि वह हुज़ूर अनवर के साथ मस्जिद के अंदर जाकर फोटो खिंचवाना चाहता है जिस पर दया करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने महोदय को तस्वीर बनाने की आज्ञा प्रदान की।

यह इंटरव्यू 4:00 बज कर 50 मिनट पर समाप्त हुआ इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारें

(शेष...............)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad